हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 15 नवंबर 2026

11 फसलें बर्बाद, नहरें सूखी और मुआवजे पर सवाल, किसानों का डेरा बरकरार



12 आज खरीद का अंतिम दिन, मंडियों में अब तक पहुंचा 7.85 लाख टन धान



खबर संक्षेप

रेलिंग से टकराकर पलटी थार, बाल-बाल बचे सवार

फतेहाबाद। जिले के जाखल खंड में गांव तलवाड़ा के पास देर रात एक थार गाड़ी अनियंत्रित होकर सडक़ किनारे पलट गई। गाड़ी सेफ्टी रेलिंग से टकराने के बाद पलटी। हादसे में थार सवार दोनों युवक सुरक्षित बच गए। दोनों युवक गांव लखूवाली ढाणी के रहने वाले हैं। कुछ दिन पहले ही उन्होंने नई थार खरीदी थी। वे जाखल शहर में निजी काम से आए थे और रात को वापस लौटते समय हादसे का शिकार हो गए।

तीन नशा तस्करों को किया गिरफ्तार, हेरोइन बरामद

फतेहाबाद। फतेहाबाद जिला पुलिस ने नशा तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए तीन अलग-अलग स्थानों से तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। एंटी नारकोटिक सेल ने गुरुनानकपुरा से संजीव कुमार को 20.10 ग्राम हेरोइन सहित पकड़ा। वहीं, सीआईए रतिया ने भिरड़ाना से धर्मवीर को 11.21 ग्राम और सदर रतिया पुलिस ने गांव नंगल से करण कुमार को 7.43 ग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया।

जल्लोपुर में आज लगेगा विशाल भण्डारा

रतिया। बाबा खेतरपाल व माता मसानी का 6वां दीवान व विशाल भण्डारा आज 15 नवंबर रविवार को सुबह 10 बजे बाबा खेतरपाल मन्दिर, दादूपुर रोड़, गांव जल्लोपुर में आयोजित किया जाएगा। इस धार्मिक कार्यक्रम की तैयारियां पूरी कर ली गई है। पूर्व विधायक लक्ष्मण नापा व उनके बेटे सुमित नापा ने बताया कि इस 6वें दीवान व विशाल भण्डारे में गुरु जी बाबा मोहित चिश्ती विशेष रूप से पहुंचेंगे और अपने मुखारविंद से श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देंगे।

पुलिस ने अवैध शराब सहित युवक दबोचा

सिरसा। पुलिस ने गांव दड़बा कलां क्षेत्र एक युवक को 60 बोतल अवैध शराब सहित गिरफ्तार किया है। सीआईए सिरसा प्रभारी ने बताया कि सीआईए सिरसा की एक पुलिस टीम गश्त के दौरान रंधावा रोड गांव दड़बा कलां क्षेत्र में मौजूद थी। इसी दौरान सामने से एक युवक प्लास्टिक का गट्टा लेकर आता हुआ दिखाई दिया।

हेरोइन सप्लायर सहित दो युवक गिरफ्तार

डबवाली। पुलिस ने नशा तस्करी के दो अलग-अलग मामलों में कार्रवाई करते हुए हेरोइन सप्लाई करने के आरोपी सुखमीत सिंह और दो साल से फरार चल रहे डोडा पोस्त के मुख्य सप्लायर राकेश कुमार को गिरफ्तार किया है। सीआईए कालांवाली पुलिस ने 12 नवंबर को पंजाब बस अड्डा मंडी कालांवाली से प्रवेश नामक आरोपी को 7.410 ग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया था। पूछताछ में प्रवेश ने खुलासा किया कि उसे यह हेरोइन सुखमीत सिंह ने सप्लाई की थी। इसके बाद पुलिस ने सुखमीत सिंह को गिरफ्तार कर लिया।

शनिवार को अधिकतम तापमान 29 और न्यूनतम 18 डिग्री दर्ज, दिनभर बादल छाए रहने से गर्मी से मिली राहत

शाम होते ही प्रदूषण की धुंध ने बढ़ाई परेशानी, आंखों में जलन और सांस लेने में दिक्कत

दिन में बादलों की ओट में रहा सूरज, शाम को बूंदाबांदी, फिर भी हवा में स्मॉग की घुटन बरकरार

- लोगों को आंखों में जलन, खांसी और सांस लेने में हो रही परेशानी

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

फतेहाबाद में मौसम का मिजाज लगातार बदल रहा है। दिन में कभी तेज धूप और गर्मी लोगों को परेशान कर रही है तो शाम होते ही शहर की आबोहवा में घुला स्मॉग सांसों के लिए मुश्किल पैदा कर रहा है। हालांकि शनिवार को मौसम ने कुछ अलग ही रंग दिखाया। सुबह से ही आसमान में बादल छाए रहे और दिनभर सूरज बादलों की ओट में छिपा रहा। इसके चलते पिछले दिनों की तुलना में गर्मी का असर कम रहा। शाम के समय हल्की बूंदाबांदी भी हुई, जिससे मौसम में ठंडक महसूस की गई। शनिवार को अधिकतम तापमान 29 डिग्री और न्यूनतम तापमान 18 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम में आए इस बदलाव के बावजूद शहरवासियों को प्रदूषण से पूरी तरह राहत नहीं मिल पाई है। शाम ढलते ही शहर के आसमान में धुएं और धूल के कणों से बनी धुंधली परत दिखाई देने लगती है। दूर से देखने पर ऐसा लगता है मानो शहर के ऊपर बादल छाए हों, लेकिन यह बादल नहीं बल्कि प्रदूषण और नमी के मेल से बनी स्मॉग की चादर है। इसके कारण लोगों को आंखों में जलन, खांसी और सांस लेने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सुबह और शाम के समय इसका असर अधिक महसूस किया जा रहा है।



फतेहाबाद। शाम के समय आसमान में छाया स्मॉग। फोटो: हरिभूमि

दिनभर बादलों ने रोकी धूप

नवंबर का आधा महीना बीतने को है, लेकिन जिले में अभी तक सर्दी का प्रभाव पूरी तरह महसूस नहीं हो रहा था। पिछले दिनों दोपहर में तेज धूप के कारण गर्मी का अहसास हो रहा था और अधिकतम तापमान 32 डिग्री के पार पहुंच गया था। शुक्रवार को अधिकतम तापमान 32.2 डिग्री और न्यूनतम 20.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। वहीं शनिवार को आसमान में सुबह से ही बादल छाए रहने और शाम को हल्की बूंदाबांदी होने के कारण अधिकतम तापमान गिरकर 29 डिग्री पर पहुंच गया। न्यूनतम तापमान भी घटकर 18 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम में आए इस बदलाव से दिन के समय गर्मी से कुछ राहत जरूर मिली, लेकिन प्रदूषण की समस्या अभी भी बनी हुई है।

कल तक हवाओं में बदलाव से राहत मिलने की उम्मीद

मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार 16 नवंबर तक प्रदेश में मौसम आमतौर पर खुश्क, लेकिन परिवर्तनशील रहने की संभावना है। विभागाध्यक्ष डॉ. मदन खीचड़ के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से हवाओं की दिशा और गति में बदलाव देखने को मिल सकता है। हवाओं की गति बढऩे पर वातावरण में जमा धुआं, धूल और प्रदूषण के कण बिखर सकते हैं। इससे स्मॉग की स्थिति में सुधार होने और लोगों को कुछ राहत मिलने की उम्मीद है। मौसम में बदलाव और हवाओं की गति बढऩा प्रदूषण के प्रभाव को कम करने में मददगार हो सकता है।

शाम होते ही दिखाई देने लगती है स्मॉग की चादर

शहर में दिन के समय वातावरण अपेक्षाकृत साफ नजर आता है, लेकिन सूर्यास्त के बाद स्थिति बदलने लगती है। हवा में मौजूद धुएं और धूल के सूक्ष्म कण वातावरण में जमा होकर धुंधली परत बना देते हैं। सडक़ों पर निकलने वाले लोगों को आंखों में चुभन और जलन महसूस होती है। वहीं, खांसी और सांस लेने में परेशानी की शिकायतें भी सामने आ रही हैं। बुजुर्गों, बच्चों और पहले से सांस संबंधी समस्याओं से जूझ रहे लोगों के लिए यह स्थिति ज्यादा परेशानी पैदा कर सकती है। दिनभर कामकाज के बाद शाम को सैर करने निकलने वाले लोगों को भी प्रदूषित हवा का सामना करना पड़ रहा है।

वातावरण में जमा हो रहे प्रदूषण के कण

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कृषि मौसम विज्ञान विभाग की रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में पिछले पांच दिनों से मौसम खुश्क बना हुआ था। इस दौरान उत्तर-पश्चिमी हवाएं हल्की गति से चलने और रात के तापमान में कमी के कारण वातावरण में धुआं, धूल और प्रदूषण के कण जमा हो रहे थे। वातावरण में मौजूद नमी के साथ मिलकर ये कण स्मॉग की स्थिति पैदा कर रहे हैं। इसके चलते प्रदेश के ज्यादातर स्थानों पर धुंध जैसी प्रदूषित परत दिखाई दे रही है। रिपोर्ट के अनुसार स्मॉग के कारण रात के तापमान में भी हल्की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। शनिवार को बादल छाए रहने और हल्की बूंदाबांदी के बावजूद प्रदूषण से पूरी तरह राहत मिलने के संकेत नहीं मिले हैं।

हवा में प्रदूषण, जिले में एक्यूआई 338 पहुंचा

हरसेक ने पकड़े पराली जलाने के 14 मामले

- अस्थमा के मरीजों की दिक्कतें भी बढ़ गई
- ईएनटी की ओपीडी में गले के उपचार के लिए मरीज पहुंच रहे

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

फतेहाबाद में प्रदूषण से लोगों की परेशानी लगातार बढ़ रही है। आठ दिन बीतने के बावजूद वायु गुणवत्ता में सुधार नहीं हुआ है। वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 338 तक पहुंच गया है। जहरीली हवा अब लोगों के स्वास्थ्य पर असर डाल रही है।

गले में खराश, दर्द और सांस लेने में परेशानी की शिकायतें आ रही हैं। ईएनटी की ओपीडी में गले के उपचार के लिए मरीज पहुंच रहे हैं। अस्थमा के मरीजों की दिक्कतें भी बढ़ गई हैं। प्रशासन का दावा है कि पराली जलाने के मामलों में पिछले वर्षों के मुकाबले 70 से 80 फीसदी तक कमी आई है। हालांकि, गत दिवस पराली जलाने के दो नए मामले भूना और रतिया क्षेत्र के कलोठा गांव में सामने आए। ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. जयप्रकाश ने प्रदूषण से बचने के लिए मास्क लगाने और गर्म पानी से गरारे करने की सलाह दी है।

शहर में पानी का छिड़काव

छाती रोग विशेषज्ञ डॉ. मनीष टुटेजा ने अस्थमा के मरीजों को विशेष सावधानी बरतने को कहा। हरसेक के अनुसार, जिले में अब तक पराली जलाने के 14 मामले दर्ज हुए हैं। नगर परिषद ने 45 लाख रुपये की स्मॉग गन से शनिवार को भी शहर में पानी का छिडक़ाव करवाया। इसके बावजूद एक्यूआई 300 से ऊपर बना हुआ है, जिससे हवा साफ न होने पर सवाल उठ रहे हैं।

शाश्वत ने राष्ट्रपति भवन में दी देशभक्ति की प्रस्तुति

- बाल दिवस के अवसर पर विशेष आमंत्रण पर राष्ट्रपति भवन पहुंचे शाश्वत अरोड़ा, स्काउट विद्यार्थी के रूप में की सहभागिता

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

बाल दिवस के अवसर पर सिरसा के विद्यार्थी शाश्वत अरोड़ा ने एक विशेष उपलब्धि हासिल करते हुए जिले का नाम गौरवान्वित किया। शाश्वत अरोड़ा को नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में आयोजित विशेष कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया, जहां उन्हें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिलने का गौरवपूर्ण अवसर प्राप्त हुआ। स्काउट से जुड़े विद्यार्थी के रूप में शाश्वत को इस कार्यक्रम में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के दौरान शाश्वत ने देशभक्ति गीत की शानदार प्रस्तुति भी दी। उनकी इस प्रस्तुति ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों का ध्यान आकर्षित किया। विशेष बात यह है कि शाश्वत अरोड़ा पढ़ाई और स्काउट गतिविधियों के साथ-साथ गायन के क्षेत्र में भी विशेष रुचि रखते हैं। वे एक प्रतिभाशाली एवं सुमधुर भजन गायक भी हैं। भजन गायन के प्रति उनका विशेष लगाव और संगीत के प्रति उनकी प्रतिभा इस अवसर पर देशभक्ति गीत की प्रस्तुति के रूप में देखने को मिली। राष्ट्रपति के समक्ष अपनी गायन प्रतिभा प्रस्तुत करना उनके लिए अत्यंत गौरवपूर्ण और अविस्मरणीय अनुभव रहा



सिरसा। राष्ट्रपति भवन में प्रस्तुति देता छात्र शाश्वत अरोड़ा। फोटो: हरिभूमि

पिता ने जताई खुशी

शाश्वत अरोड़ा के पिता राकेश अरोड़ा एडवोकेट तथा माता डॉ. शिखा अरोड़ा हैं। उनके माता-पिता ने हमेशा उन्हें शिक्षा, संगीत, अनुशासन और सामाजिक गतिविधियों में आगे बढऩे के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने शाश्वत की इस उपलब्धि पर खुशी व्यक्त करते हुए इसे पूरे परिवार और सिरसा के लिए गर्व का क्षण बताया। शाश्वत की इस उपलब्धि से परिवारजनों, शुभचिंतकों एवं सिरसा वासियों में हर्ष का माहौल है।

सिरसा डिपो में टायरों की कमी के चलते 21 बसें खड़ी, कर्मचारियों ने जताई चिंता

- कर्मचारियों से बिना फिटनेस जांच के किसी भी बस को लेकर रूट पर न निकलने की अपील

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

हरियाणा रोडवेज सिरसा डिपो में बसों के टायरों की कमी के चलते 21 बसें डिपो परिसर में खड़ी कर दी गई हैं। रोडवेज कर्मचारियों ने चिंता व्यक्त करते हुए कर्मचारियों से अपील की है कि वे बिना फिटनेस जांच के किसी भी बस को लेकर रूट पर न निकलें। सिरसा डिपो प्रधान पृथ्वी सिंह चाहर ने बताया कि सिरसा में 16, डबवाली सब डिपो में पांच बसें खड़ी हैं, जबकि पूरे हरियाणा के अंदर 520 बसें बिना टायरों के डिपो में खड़ी हैं। चाहर ने कहा कि ऐसी स्थिति में कर्मचारियों को अपनी ड्यूटी के दौरान विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यदि किसी भी कर्मचारी की कहीं पर भी ड्यूटी लगाई जाती है तो वह संबंधित फोरमैन, मैकेनिक या एसएसआई से बस की फिटनेस की जांच करवाकर ही बस लेकर रवाना हो।

टायरों की स्थिति ठीक न होने से हो सकती है अनहोनी

उन्होंने कहा कि बसों में टायरों की स्थिति ठीक नहीं है और सडक़ पर चलते समय किसी भी प्रकार की अनहोनी हो सकती है। ऐसे में कर्मचारियों को अपनी नौकरी और यात्रियों की सुरक्षा को खतरे में नहीं डालना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि समय पर बस रवाना न हो पाने की स्थिति में भी सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। चाहर ने दोहराया कि कर्मचारियों की सुरक्षा सर्वोपरि है और किसी भी परिस्थिति में बिना फिटनेस सुनिश्चित किए बस को सडक़ पर नहीं उतारना चाहिए।

डबवाली में स्थापित होगी अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा

हरिभूमि न्यूज ⏭डबवाली

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की घोषणा को अमलीजामा पहनाते हुए नगर परिषद डबवाली ने पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। नगर परिषद ने इसके लिए टेंडर कॉल किया है। टेंडर प्रक्रिया पूरी होने के बाद प्रतिमा तैयार करवाकर स्थापित की जाएगी। परियोजना पर करीब 12 लाख रुपए खर्च होने का अनुमान है। प्रतिमा स्थापित करने के लिए अभी स्थान तय नहीं हुआ है। नगर परिषद की ओर से टाउन पार्क और कम्युनिटी हॉल में से किसी एक स्थान का चयन करने पर विचार किया जा रहा है। स्थान तय होने के बाद प्रतिमा स्थापना की प्रक्रिया आगे बढ़ेगी। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने प्रदेशभर में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमाएं स्थापित करने की घोषणा की थी। इसी के तहत डबवाली नगर परिषद ने भी प्रक्रिया शुरू की है।

नाबालिग लड़की का विवाह रुकवाया

- भूना में आज होनी थी शादी, महिला संरक्षण अधिकारी की तत्परता से टला बाल विवाह

हरिभूमि न्यूज ⏭भूना

शहर के वार्ड नंबर 2 में एक परिवार की ओर से गुपचुप तरीके से नाबालिग लड़की की शादी करवाने की तैयारी की जा रही थी। परिवार ने 15 नवंबर को विवाह की तारीख तय की हुई थी, लेकिन इसकी भनक महिला संरक्षण एवं बाल विवाह निषेध अधिकारी रेखा अग्रवाल को लग गई। सूचना मिलते ही उन्होंने तत्परता दिखाते हुए शादी से एक दिन पहले शनिवार को मौके पर पहुंचकर विवाह रुकवा दिया। अधिकारी की इस कार्रवाई से नाबालिग लडक़ी का बाल विवाह होने से बच गया। मामले की सूचना मिलने पर महिला संरक्षण एवं बाल विवाह निषेध अधिकारी रेखा अग्रवाल ने तुरंत कार्रवाई की और परिवार को बाल विवाह से जुड़े कानूनी प्रावधानों की जानकारी देकर विवाह नहीं करने के निर्देश दिए।



भूना। नाबालिग लडक़ी की शादी रोकने के परिवार की महिलाओं को दिशा-निर्देश देते रेखा अग्रवाल।

कालांवाली में 22 नवंबर को होगी यूथ मैराथन

हरिभूमि न्यूज ⏭कालांवाली

- मुख्यमंत्री सैनी दिखाएंगे हरी झंडी, तैयारियां जोरों पर

हरियाणा को नशामुक्त बनाने और युवाओं को खेलों एवं फिटनेस के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 22 नवंबर को कालांवाली उपमंडल में यूथ मैराथन का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन को लेकर तैयारियां जोरों पर चल रही हैं। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मैराथन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। जिला प्रशासन ने यूथ मैराथन को लेकर तैयारियां शुरू कर दी है। कार्यक्रम में जिले के युवाओं, खिलाडिय़ों, सामाजिक संगठनों और आमजन की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी तथा इसके लिए पंजीकरण जारी है। मैराथन के माध्यम से युवाओं को नशे से दूर रहने का संदेश दिया।

पुलिस ने सात आरोपियों को किया गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

डबवाली पुलिस ने अलग-अलग मामलों में सात आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने 1835 प्रतिबंधित गोलियां व कैप्सूल बरामद किए हैं। इस दौरान 7300 रुपए की ड्रग मनी भी जब्त की गई है। पुलिस प्रवक्ता आंनद कुमार ने बताया कि सीआईए पुलिस टीम गश्त के दौरान गांव जलालआना क्षेत्र में मौजूद थी। एक व्यक्ति को शक के आधार पर काबू कर उसके कब्जे से 1250 नशीली गोलियां व कैप्सूल बरामद हुए। आरोपी की पहचान गुलाब सिंह के रूप में हुई है।



नशीली गोलियों के साथ पकड़ा आरोपी।

इसके अलावा पुलिस ने गांव देसूजोधा क्षेत्र कुलबीर सिंह को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 250 प्रतिबंधित गोलियां बरामद की गई हैं।

अभियान 24 जनवरी तक भर सकेंगे मकान और परिवार की जानकारी, 25 जनवरी से प्रगणक घर-घर जाकर करेंगे सत्यापन

जनगणना-2027 में पहली बार मिलेगी स्व-गणना की सुविधा

अब घर बैठे होगी जनगणना की शुरुआत, 10 जनवरी से परिवार खुद ऑनलाइन दर्ज कर सकेंगे पूरा ब्योरा

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

देश में होने वाली जनगणना-2027 इस बार कई मायनों में पहले से अलग होगी। पहली बार नागरिकों को अपनी और अपने परिवार की जानकारी खुद ऑनलाइन दर्ज करने का अवसर मिलेगा। इसके लिए 10 जनवरी से 24 जनवरी तक स्व-गणना (सेल्फ एन्यूमरेशन) की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। परिवार का कोई भी सदस्य निर्धारित पोर्टल पर जाकर घर बैठे मकान और परिवार से संबंधित विवरण भर सकेगा। इस व्यवस्था से लोगों को अपनी जानकारी सीधे दर्ज करने की सुविधा मिलेगी।स्व-गणना की अवधि समाप्त होने के बाद 25 जनवरी से 28 फरवरी तक जनगणना कर्मचारी यानी प्रगणक घर-घर पहुंचेंगे। इस दौरान वे उन परिवारों की जानकारी एकत्र करेंगे।

कागजों की जगह स्मार्टफोन से दर्ज होगा पूरा डाटा

इस बार जनगणना की पूरी प्रक्रिया को डिजिटल स्वरूप दिया जाएगा। पहले जहां प्रगणक घर-घर जाकर कागजी रजिस्टर और फॉर्म में जानकारी दर्ज करते थे, वहीं अब उनके हाथों में स्मार्टफोन होगा। विशेष मोबाइल एप के माध्यम से मकान और परिवार से संबंधित आंकड़े सीधे डिजिटल सिस्टम में दर्ज किए जाएंगे। इससे आंकड़ों को एकत्र करने, सुरक्षित रखने और आगे उनका विश्लेषण करने की प्रक्रिया आसान होगी। इसके अलावा जनगणना प्रबंधन एवं निगरानी प्रणाली के माध्यम से अभियान की प्रगति पर नजर रखी जाएगी। इससे अधिकारियों को यह जानकारी मिल सकेगी कि किस क्षेत्र में जनगणना का कितना काम पूरा हुआ है और कहां प्रक्रिया अभी बाकी है। डिजिटल व्यवस्था से कर्मचारियों के कामकाज की निगरानी करने में भी मदद मिलेगी।

परिवार और मकान से जुड़े पूछे जाएंगे 40 सवाल

जनगणना के दौरान प्रत्येक परिवार से मकान और उसमें रहने वाले सदस्यों से संबंधित विभिन्न जानकारियां जुटाई जाएंगी। इसके तहत जनसांख्यिकीय स्थिति, सामाजिक और शैक्षणिक पृष्ठभूमि, आर्थिक गतिविधियों, भाषा तथा प्रवास से जुड़े सवाल पूछे जाएंगे। जनगणना में प्रत्येक व्यक्ति से कुल 40 सवाल पूछे जाने हैं। इन सवालों के माध्यम से देश की आबादी की वास्तविक स्थिति और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का विस्तृत आंकड़ा तैयार किया जाएगा। इन आंकड़ों के आधार पर सरकार को भविष्य की योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। किस क्षेत्र में स्कूलों, अस्पतालों, सडक़ों, पेयजल और अन्य बुनियादी सुविधाओं की अधिक आवश्यकता है, इसका आकलन जनगणना के आंकड़ों से किया जा सकेगा।

यह रहेगा जनगणना का पूरा कार्यक्रम

- 10 से 24 जनवरी 2027: नागरिकों के लिए ऑनलाइन स्व-गणना की सुविधा।
- 5 जनवरी से 28 फरवरी 2027: प्रगणकों द्वारा घर-घर जाकर जनगणना और ऑनलाइन दर्ज विवरण का सत्यापन।
- 1 से 5 मार्च 2027: पांच दिवसीय पुनरीक्षण अभियान।

हर 3 साल में म्यूचुअल फंड स्कीम बदलना समझदारी या बड़ी गलती

● सिर्फ पिछले एक या तीन साल के रिटर्न को देखकर फंड बदलने से बचें● रोलिंग रिटर्न बताता है बाजार के अलग-अलग दौर में स्कीम का प्रदर्शन● जल्दबाजी में स्विच करने से कंपाउंडिंग, टैक्स और अतिरिक्त शुल्क पर असर

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले कई लोग एक आम गलती करते हैं। वे हर दो-तीन साल में अपना पोर्टफोलियो देखते हैं और जिस स्कीम का रिटर्न कम दिखाई देता है, उसे बेचकर उस फंड में पैसा लगा देते हैं जिसने हाल के वर्षों में बेहतर प्रदर्शन किया हो। पहली नजर में यह फैसला समझदारी भरा लग सकता है, लेकिन बार-बार फंड बदलने की यह आदत लंबे समय में निवेश के नतीजों को प्रभावित कर सकती है। इसकी वजह है बाजार के प्रदर्शन को समझने में जल्दबाजी, स्विच करने का खर्च और कंपाउंडिंग पर पड़ने वाला असर। निवेशकों को यह समझना जरूरी है कि किसी म्यूचुअल फंड का पिछला रिटर्न उसके भविष्य के प्रदर्शन की गारंटी नहीं होता। बाजार में तेजी के दौरान बेहतर प्रदर्शन करने वाली स्कीम अगले कुछ वर्षों में कमजोर भी रह सकती है। इसी तरह किसी फंड का एक-दो साल तक पीछे रहना यह साबित नहीं करता कि उसकी निवेश रणनीति खराब हो गई है। इसलिए केवल एक निश्चित अवधि के रिटर्न के आधार पर निवेश का फैसला लेने के बजाय फंड के प्रदर्शन की निरंतरता देखना जरूरी है।



इक्विटी और डेट फंड के कर नियम अलग हो सकते हैं। निवेश की अवधि और निकासी की तारीख के आधार पर भी कर देनदारी बदलती है। इसलिए हर तीन साल में फंड बदलने से पहले एग्जिट लोड और टैक्स की गणना जरूर कर लें। केवल सकल रिटर्न की तुलना करना पर्याप्त नहीं है।

ट्रेलिंग रिटर्न और रोलिंग रिटर्न में क्या है अंतर

फंड का प्रदर्शन जांचने के लिए आमतौर पर ट्रेलिंग रिटर्न और रोलिंग रिटर्न दो तरीके इस्तेमाल किए जाते हैं। ट्रेलिंग रिटर्न किसी एक तारीख से पीछे की ओर एक निश्चित अवधि का प्रदर्शन बताता है। उदाहरण के लिए, आज से पिछले तीन साल में किसी फंड ने कितना सालाना रिटर्न दिया, यह उसका तीन साल का ट्रेलिंग रिटर्न होगा। इसमें केवल दो तारीखों के बीच का प्रदर्शन शामिल होता है। इसलिए बाजार की तेजी या गिरावट का उस पर काफी असर पड़ सकता है। इसके विपरीत, रोलिंग रिटर्न अलग-अलग तारीखों से शुरू होने वाली समान निवेश अवधियों का प्रदर्शन दिखाता है। मान लीजिए किसी फंड का तीन साल का रोलिंग रिटर्न देखना है। इसके लिए अलग-अलग तारीखों पर निवेश शुरू करके अगले तीन साल के रिटर्न की गणना की जाती है। इससे पता चलता है कि बाजार के अलग-अलग दौर में फंड ने कैसा प्रदर्शन किया। निवेशक यह समझ पाते हैं कि स्कीम ने केवल किसी एक अनुकूल अवधि में अच्छा रिटर्न दिया है या अलग-अलग परिस्थितियों में भी प्रदर्शन की निरंतरता बनाए रखी है।

तीन निवेशकों का उदाहरण समझिए

मान लीजिए तीन दोस्तों ने एक ही म्यूचुअल फंड में अलग-अलग वर्षों में निवेश किया। पहले दोस्त ने जनवरी 2021 में निवेश किया और जनवरी 2024 में पैसा निकाला। उसे सालाना 15 प्रतिशत रिटर्न मिला। दूसरे ने जनवरी 2022 में निवेश किया और जनवरी 2025 में निकासी की। बाजार की परिस्थितियों के कारण उसका रिटर्न 10 प्रतिशत रहा। तीसरे दोस्त ने जनवरी 2023 में निवेश शुरू किया और जनवरी 2026 में पैसा निकाला। उसे 14 प्रतिशत सालाना रिटर्न मिला। तीनों अवधियों के रिटर्न का साधारण औसत करीब 13 प्रतिशत बैठता है। यह उदाहरण बताता है कि अलग-अलग समय पर निवेश करने वालों को एक ही फंड से अलग नतीजे मिल सकते हैं। हालांकि, वास्तविक रोलिंग रिटर्न का आकलन केवल तीन अवधियों का औसत निकालकर नहीं किया जाता।

कब बदलना चाहिए म्यूचुअल फंड?

फंड बदलने का फैसला केवल इस आधार पर नहीं करना चाहिए कि किसी दूसरी स्कीम ने पिछले एक साल, तीन साल या हाल की अवधि में उससे अधिक रिटर्न दिया है। म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय छोटी अवधि के उतार-चढ़ाव और रिटर्न की तुलना के बजाय फंड के लगातार प्रदर्शन और उसकी निवेश रणनीति को समझना ज्यादा जरूरी है। सबसे पहले यह देखना चाहिए कि संबंधित फंड लगातार अपने बेंचमार्क और समान श्रेणी की दूसरी स्कीमों के मुकाबले कमजोर प्रदर्शन तो नहीं कर रहा है। यदि ऐसा है तो यह भी समझना जरूरी है कि इसके पीछे बाजार की परिस्थितियां हैं या फंड प्रबंधन की रणनीति में कोई कमी है। क्या फंड मैनेजर बदला है? क्या निवेश की रणनीति, पोर्टफोलियो या प्रमुख कंपनियों में हिस्सेदारी में बड़ा बदलाव आया है? इसके अलावा यह भी जांचना चाहिए कि फंड का जोखिम स्तर आपकी वित्तीय जरूरतों, निवेश के उद्देश्य और निवेश अवधि के अनुरूप है या नहीं।

बार-बार फंड बदलने से कैसे घट सकता है मुनाफा?

मान लीजिए कोई निवेशक हर महीने 15 हजार रुपये की एसआईपी करता है और इसे 15 साल तक जारी रखता है। इस दौरान उसका कुल निवेश 27 लाख रुपये होगा। यदि निवेश को लंबे समय तक बनाए रखा जाए और औसतन 12 प्रतिशत सालाना रिटर्न मिले, तो दिए गए उदाहरण के अनुसार फंड की सकल कीमत करीब 71.39 लाख रुपये हो सकती है। दूसरी स्थिति में निवेशक हर तीन साल में फंड बदलता है। इस दौरान फंड बेचने और नई स्कीम में निवेश करने के बीच का अंतर, बाजार की टाइमिंग और संभावित शुल्क उसके नतीजे को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण में बार-बार स्विच करने की स्थिति में सकल फंड मूल्य करीब 66.42 लाख रुपये माना गया है। दोनों स्थितियों में लगभग 4.97 लाख रुपये का अंतर दिखाई देता है। म्यूचुअल फंड से पैसा निकालने या एक स्कीम से दूसरी में जाने पर एग्जिट लोड लग सकता है। इसकी दर और अवधि संबंधित स्कीम के नियमों पर निर्भर करती है। इसके अलावा, यूनिट बेचने पर होने वाले लाभ पर लागू कर भी निवेश के अंतिम मूल्य को प्रभावित करता है।



कर्ज चुकाने में आगे, फिर भी महिला उद्यमियों को ऋण मिलने में बाधाएं

■ महिलाओं के कारोबार ऋण में 2017 से 7.5 गुना वृद्धि
■ कर्ज चुकाने का रिकॉर्ड भी बेहतर; इसके बावजूद केवल 4% महिला कारोबारी इकाइयों के पास ओवरड्राफ्ट सुविधा
■ संपत्ति के दस्तावेज व डिजिटल पहुंच की कमी रुकावट

कर्ज-असमानता
बिजनेस डेस्क

महिलाएं कारोबार शुरू करने और उसे आगे बढ़ाने में लगातार अपनी क्षमता साबित कर रही हैं। ऋण लेने के बाद उसे समय पर चुकाने के मामले में भी उनका रिकॉर्ड बेहतर है। इसके बावजूद महिला उद्यमियों को कारोबार के विस्तार के लिए पर्याप्त कर्ज नहीं मिल पा रहा है। यह स्थिति बताती है कि समस्या केवल महिलाओं की आर्थिक क्षमता या ऋण चुकाने की योग्यता की नहीं, बल्कि बैंकिंग व्यवस्था और कर्ज आकलन की प्रक्रिया में मौजूद संरचनात्मक बाधाओं की भी है। नीति आयोग और ट्रांसयूनियन सिबिल की अप्रैल 2026 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत के कुल संस्थागत ऋण में महिलाओं की हिस्सेदारी 26 प्रतिशत है। महिला कारोबारियों का ऋण पोर्टफोलियो 2017 के मुकाबले 7.5 गुना बढ़ा है। इसके बावजूद कारोबार के नाम पर ऋण लेने वाली महिलाओं की संख्या सीमित बनी हुई है।

बेहतर भुगतान का रिकॉर्ड

रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2024 में ऋण लेने वाली महिलाओं के ऐसे कर्ज की चूक दर, जिनकी किस्त 90 दिन या उससे अधिक समय से बकाया थी, कुल औसत चूक दर की तुलना में केवल 0.7 गुना रही। इसका अर्थ है कि महिला कर्जदारों का भुगतान रिकॉर्ड तुलनात्मक रूप से बेहतर रहा है। इसके बावजूद महिला उद्यमियों को बड़े ऋण और कारोबार चलाने के लिए जरूरी कार्यशील पूंजी हासिल करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कई महिलाएं अपने कारोबार के लिए व्यक्तिगत ऋण, सूक्ष्म वित्त और मुद्रा योजना पर निर्भर हैं। इनसे छोटे स्तर पर कारोबार शुरू करने में मदद मिल सकती है, लेकिन कारोबार का विस्तार करने के लिए अधिक राशि, लचीली ऋण सुविधा और नियमित कार्यशील पूंजी की जरूरत होती है। यहां महिलाओं की पहुंच सीमित दिखाई देती है। इस अंतर का एक उदाहरण ओवरड्राफ्ट सुविधा है। अप्रैल 2026 तक केवल लगभग 4 प्रतिशत महिला स्वामित्व वाली कारोबारी इकाइयों के पास ओवरड्राफ्ट की सुविधा थी, जबकि सभी कारोबारों में यह अनुपात करीब 40 प्रतिशत था।

संपत्ति और दस्तावेजों की कमी बन रही बाधा

बैंक आमतौर पर ऋण देने से पहले संपत्ति, आय, वित्तीय रिकॉर्ड और कारोबार की स्थिति का आकलन करते हैं। महिलाओं के मामले में इन मानकों पर कई व्यावहारिक मुश्किलें सामने आती हैं। परिवार की संपत्ति अक्सर पुरुष सदस्यों के नाम पर होती है। ऐसे में महिला उद्यमी के पास कारोबार के लिए गिरवी रखने योग्य संपत्ति नहीं होती। इसके अलावा कई महिला संचालित कारोबार अनौपचारिक रूप से चलते हैं, जहां नियमित लेखा-जोखा, ऑडिट और आय से जुड़े दस्तावेज उपलब्ध नहीं होते।

डिजिटल रिकॉर्ड से खुल सकते हैं नए रास्ते

अब ऋण देने की प्रक्रिया में डिजिटल वित्तीय रिकॉर्ड की भूमिका बढ़ रही है। मार्च 2025 में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को ऋण देने के लिए डिजिटल आकलन की व्यवस्था शुरू की गई। इसमें वस्तु एवं सेवा कर रिटर्न, आयकर रिटर्न और बैंक विवरण जैसे आंकड़ों के आधार पर कारोबार की वित्तीय स्थिति समझने में मदद मिलती है। इससे पारंपरिक संपत्ति आधारित आकलन के विकल्प तैयार हो सकते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और निजी संस्थाएं भी आंकड़ों पर आधारित ऋण आकलन को बढ़ावा दे रही हैं। किनारा कैपिटल की 'हर विकास' जैसी पहल इसी दिशा में काम कर रही है। हालांकि, डिजिटल व्यवस्था अपने आप में सभी समस्याओं का समाधान नहीं है। रिपोर्ट के अनुसार, ऋणों की संख्या के लिहाज से महिलाओं को केवल 19.8 प्रतिशत ऋण मिले, जबकि कुल संस्थागत ऋण में उनकी हिस्सेदारी 26 प्रतिशत है।

मोबाइल इंटरनेट की कमी भी बन रही चुनौती

डिजिटल वित्तीय सेवाओं तक पहुंच के लिए मोबाइल और इंटरनेट का इस्तेमाल जरूरी है। जीएसएमए के 2024 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में 75 प्रतिशत महिलाओं के पास मोबाइल फोन हैं, जबकि पुरुषों में यह अनुपात 85 प्रतिशत है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि केवल 37 प्रतिशत महिलाएं मोबाइल इंटरनेट का इस्तेमाल करती हैं। स्मार्टफोन, डिजिटल भुगतान और बैंकिंग सेवाओं तक सीमित पहुंच के कारण महिलाओं के वित्तीय लेनदेन का डिजिटल रिकॉर्ड भी अधूरा रह जाता है। ऐसे में बैंक और ऋण देने वाली संस्थाएं यदि केवल डिजिटल लेनदेन और ऑनलाइन वित्तीय रिकॉर्ड के आधार पर कर्ज की पात्रता तय करती हैं तो महिलाओं के सामने नई बाधा खड़ी हो सकती है। इसके लिए ऋण आवेदन, वित्तीय प्रबंधन और बैंकिंग सेवाओं को सरल बनाना होगा।

कर्ज के साथ कारोबार पर नियंत्रण भी जरूरी

महिला उद्यमियों के वित्तीय समावेशन का अर्थ केवल उनके नाम पर ऋण स्वीकृत करना नहीं है। कई बार कर्ज महिला के नाम पर लिया जाता है, लेकिन उसका इस्तेमाल और कारोबार से जुड़े फैसले परिवार के पुरुष सदस्य करते हैं। ऐसी स्थिति में ऋण चुकाने की जिम्मेदारी महिला पर रहती है, जबकि धन के इस्तेमाल पर उसका वास्तविक नियंत्रण नहीं होता। इसलिए बैंकों, सरकार और वित्तीय संस्थाओं को महिला उद्यमियों के नाम पर अलग कारोबारी बैंक खाते, व्यक्तिगत यूपीआई पहचान और नियमित वित्तीय रिकॉर्ड बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। संयुक्त संपत्ति के दस्तावेजों को भी पात्र परिस्थितियों में गिरवी के रूप में स्वीकार करने पर विचार किया जा सकता है।

टैक्स बचाने को ईएलएसएस फंड सही निवेश से पहले जान लें नफा नुकसान

■ पुरानी टैक्स व्यवस्था में 80सी के तहत सालाना 1.5 लाख तक की कटौती का लाभ
■ तीन साल का लॉक-इन; शेयर बाजार में निवेश होने से रिटर्न की गारंटी नहीं
■ पांच से सात साल का नजरिया रखना बेहतर

जानकारी
बिजनेस डेस्क

टैक्स बचाने के साथ निवेश बढ़ाने की योजना बना रहे लोगों के लिए इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम (ईएलएसएस) म्यूचुअल फंड एक विकल्प हो सकता है। इसकी खासियत यह है कि इसमें निवेश करने पर पुरानी टैक्स व्यवस्था के तहत आयकर अधिनियम की धारा 80सी के अंतर्गत कटौती का लाभ मिल सकता है। साथ ही, इसमें तीन साल का लॉक-इन होता है, जो कई दूसरी टैक्स बचत योजनाओं की तुलना में कम है। हालांकि, केवल टैक्स बचाने के उद्देश्य से ईएलएसएस में पैसा लगाना सही रणनीति नहीं है। निवेश से पहले इसके बाजार जोखिम, लॉक-इन और अपनी वित्तीय जरूरतों को समझना जरूरी है। ईएलएसएस की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें निवेश की गई राशि पर पुरानी टैक्स व्यवस्था में सालाना अधिकतम 1.5 लाख रुपये तक की कटौती का दावा किया जा सकता है। लेकिन यह सीमा केवल ईएलएसएसके लिए अलग से नहीं है। कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ), सार्वजनिक भविष्य निधि (पीपीएफ), जीवन बीमा प्रीमियम और धारा 80सी के तहत आने वाले अन्य पात्र निवेश भी इसी सीमा में शामिल होते हैं। इसलिए यदि किसी व्यक्ति ने इन माध्यमों से पहले ही 1.5 लाख रुपये की सीमा का इस्तेमाल कर लिया है तो ईएलएसएस में अतिरिक्त निवेश करने से 80सी के तहत अलग से टैक्स लाभ नहीं मिलेगा। नई टैक्स व्यवस्था चुनने वाले अधिकांश करदाताओं को धारा 80सी की कटौती का लाभ नहीं मिलता। ऐसे में निवेश करने से पहले यह देखना जरूरी है कि आप किस टैक्स व्यवस्था के तहत रिटर्न दाखिल कर रहे हैं और पुरानी व्यवस्था में 80सी की कितनी सीमा पहले ही इस्तेमाल हो चुकी है। टैक्स बचत की गणना किए बिना केवल फंड की लोकप्रियता देखकर निवेश करना नुकसानदेह हो सकता है।



3 वर्ष का लॉक-इन, लेकिन मुनाफे की गारंटी नहीं

ईएलएसएस फंड में प्रत्येक निवेश की राशि पर तीन साल का लॉक-इन लागू होता है। यानी जिस तारीख को निवेश किया गया है, उस निवेश की यूनिट तीन साल पूरे होने से पहले नहीं निकाली जा सकती। एसआईपी के जरिये निवेश करने वालों को यह बात विशेष रूप से समझनी चाहिए। हर किस्त का लॉक-इन अलग-अलग होता है। उदाहरण के लिए, जनवरी में लगाई गई किस्त तीन साल बाद जनवरी में निकासी के योग्य होगी, जबकि फरवरी की किस्त का लॉक-इन अगले महीने पूरा होगा। पीपीएफ में निवेश की अवधि 15 साल और राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र (एनएससी) में पांच साल होती है। इसकी तुलना में ईएलएसएस का तीन साल का लॉक-इन कम है। यही वजह है कि टैक्स बचाने के साथ शेयर बाजार में निवेश करना चाहने वाले लोगों के बीच यह लोकप्रिय विकल्प है। लेकिन तीन साल बाद पैसा निकालने की सुविधा का अर्थ यह नहीं है कि तीन साल में अच्छा रिटर्न मिलना तय है।

शेयर बाजार का जोखिम समझना जरूरी : ईएलएसएस एक इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड श्रेणी है। इसमें निवेश की गई राशि का बड़ा हिस्सा शेयर बाजार में लगाया जाता है। बाजार में तेजी आने पर फंड का मूल्य बढ़ सकता है, लेकिन गिरावट के समय निवेश की कीमत घटने का जोखिम भी रहता है। इसलिए इसे निश्चित ब्याज देने वाली बैंक एफडी या छोटी बचत योजनाओं के समान नहीं समझना चाहिए। यदि किसी निवेशक को अगले दो-तीन साल में घर खरीदना है, बच्चों की फीस चुकानी है या किसी अन्य जरूरी खर्च के लिए रकम चाहिए तो केवल टैक्स बचाने के लिए ईएलएसएस में निवेश करना उचित नहीं होगा। इस फंड को कम से कम पांच से सात साल या उससे अधिक की निवेश अवधि को ध्यान में रखकर देखना बेहतर है।

नवंबर 2026 के लिए छह ईएलएसएस फंडों पर नजर

- केनरा रोबेको ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड
- मिराए एसेट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड
- इनवेस्को इंडिया ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड
- डीएसपी ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड
- क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड
- बैंक ऑफ इंडिया ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

फंड चुनते समय किन बातों की करें जांच

ईएलएसएस फंड चुनते समय केवल पिछले एक या तीन साल का रिटर्न देखना पर्याप्त नहीं है। यह भी जांचना चाहिए कि अलग-अलग बाजार परिस्थितियों में फंड ने कैसा प्रदर्शन किया है। क्या उसने अपने बेंचमार्क और समान श्रेणी के दूसरे फंडों की तुलना में लगातार बेहतर प्रदर्शन किया है? बाजार में गिरावट के दौरान उसमें कितनी कमी आई? जोखिम के अनुपात में कितना अतिरिक्त रिटर्न मिला? इन सवालों के जवाब निवेश का फैसला लेने में मदद कर सकते हैं। फंड के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए रोलिंग रिटर्न, प्रदर्शन की निरंतरता और गिरावट के दौरान हुए नुकसान जैसे पैमानों को देखना उपयोगी है। अंततः ईएलएसएस में निवेश का फैसला केवल टैक्स बचत के आधार पर नहीं होना चाहिए। पहले अपनी टैक्स व्यवस्था और 80सी की उपलब्ध सीमा देखें। फिर निवेश की अवधि, बाजार जोखिम और जरूरत के समय पैसे की उपलब्धता पर विचार करें। टैक्स बचत के साथ संपत्ति बनाने का लक्ष्य तभी पूरा हो सकता है, जब निवेश सही योजना, पर्याप्त अवधि और जोखिम को समझकर किया जाए।

अगले साल के लिए नजर रखें इन फ्लेक्सी कैप फंड पर



● बाजार की अनिश्चितता के बीच बड़े, मझोले और छोटे शेयरों में निवेश की आजादी
● तीन साल के प्रदर्शन, जोखिम और रिटर्न के आधार पर तीन योजनाएं चर्चा में

सुझाव
बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में निवेश करते समय केवल तेजी दिखाने वाले शेयरों या फंड के पीछे भागना हमेशा सही रणनीति नहीं होती। बाजार में ऊंचे मूल्यांकन, अलग-अलग कंपनियों और क्षेत्रों के प्रदर्शन में अंतर, वैश्विक अनिश्चितताएं और उतार-चढ़ाव निवेशकों के सामने चुनौती बने हुए हैं। ऐसे माहौल में निवेश का विविधीकरण महत्वपूर्ण हो जाता है। म्यूचुअल फंड की फ्लेक्सी कैप श्रेणी इसी जरूरत को पूरा करने का विकल्प देती है। फ्लेक्सी कैप फंड को बड़ी, मझोली और छोटी कंपनियों में निवेश करने की स्वतंत्रता होती है। फंड प्रबंधक बाजार की परिस्थितियों, कंपनियों के मूल्यांकन और भविष्य की संभावनाओं के अनुसार इन तीनों श्रेणियों में निवेश का अनुपात बदल सकते हैं। इससे किसी एक बाजार श्रेणी पर निर्भरता कम करने और अलग-अलग क्षेत्रों में अवसर तलाशने की गुंजाइश मिलती है। इक्विटीमास्टर की 7 नवंबर 2026 की रिपोर्ट में तीन ऐसे फ्लेक्सी कैप फंड का उल्लेख किया गया है, जिन्हें 2027 के लिए निगरानी सूची में रखा जा सकता है।

1. व्हाइटओक कैपिटल फ्लेक्सी कैप फंड

अगस्त 2022 में शुरू हुआ व्हाइटओक कैपिटल फ्लेक्सी कैप फंड अपेक्षाकृत नया है, लेकिन तीन साल के प्रदर्शन में इसने अपनी श्रेणी और बेंचमार्क से बेहतर रिटर्न दिया है। फंड का निवेश दृष्टिकोण कंपनियों के चयन पर आधारित है। यह किसी एक क्षेत्र या निवेश शैली पर अत्यधिक निर्भर रहने के बजाय अलग-अलग उद्योगों और बाजार पूंजीकरण वाली कंपनियों में निवेश करता है। पिछले तीन वर्षों में फंड ने 14.36 प्रतिशत वार्षिक चक्रवृद्धि दर (सीएजीआर) से रिटर्न दिया, जबकि निफ्टी 500 टीआरआई का रिटर्न 10.85 प्रतिशत रहा। इस अवधि में श्रेणी का औसत रिटर्न 12.39 प्रतिशत था। जोखिम के लिहाज से भी इसके आंकड़े उल्लेखनीय हैं। फंड का मानक विचलन 13.83 रहा, जबकि श्रेणी का औसत 14.39 था। शार्प अनुपात 0.18 और सॉर्टिनो अनुपात 0.33 रहा। दोनों आंकड़े श्रेणी के औसत से बेहतर हैं। सितंबर 2026 तक इस फंड का प्रबंधनाधीन परिसंपत्ति आकार (एयूएम) करीब 9,300 करोड़ रुपये था। फंड के पोर्टफोलियो में 155 शेयर शामिल थे। आईसीआईसीआई बैंक, भारती एयरटेल, एचडीएफसी बैंक, नेस्ले इंडिया और एसबीआई इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में थे। इसका लगभग 50-54 प्रतिशत निवेश बड़े शेयरों में, 6-9 प्रतिशत मझोली कंपनियों में और 22-29 प्रतिशत छोटी कंपनियों में रहा। इसका पोर्टफोलियो अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय रहता है।

2. आदित्य बिड़ला एसएल फ्लेक्सी कैप फंड

अगस्त 1998 में शुरू हुआ आदित्य बिड़ला एसएल फ्लेक्सी कैप फंड इस श्रेणी की पुरानी योजनाओं में शामिल है। पहले यह आदित्य बिड़ला एसएल इक्विटी फंड के नाम से जाना जाता था। यह मुख्य रूप से बड़ी कंपनियों में निवेश करता है, लेकिन बेहतर विकास संभावनाओं के लिए मझोली और छोटी कंपनियों में भी हिस्सेदारी रखता है। इसकी निवेश रणनीति ऐसी कंपनियों की पहचान पर केंद्रित है, जिनकी बाजार हिस्सेदारी बढ़ रही हो, लाभ मार्जिन में सुधार हो रहा हो और पूंजी के इस्तेमाल की क्षमता बेहतर हो। पिछले तीन वर्षों में इस फंड ने 15.48 प्रतिशत सीएजीआर से रिटर्न दिया। इसी अवधि में निफ्टी 500 टीआरआई का रिटर्न 10.85 प्रतिशत और श्रेणी का औसत 12.39 प्रतिशत रहा। इसका मानक विचलन 13.17 था, जो बेंचमार्क और श्रेणी औसत से कम है। शार्प अनुपात 0.20 और सॉर्टिनो अनुपात 0.38 रहा। सितंबर 2026 तक इसका एयूएम करीब 28,000 करोड़ रुपये था। पोर्टफोलियो में लगभग 85 शेयर थे। आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज और एसबीआई इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में शामिल थे। फंड का कारोबार अनुपात 20-30 प्रतिशत के आसपास रहा, जो अपेक्षाकृत लंबी अवधि तक निवेश बनाए रखने की रणनीति को दर्शाता है। पिछले एक साल में इसका 55-67 प्रतिशत निवेश बड़ी कंपनियों में रहा।



3. एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड

एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग की पुरानी योजनाओं में से एक है। इसकी शुरुआत जनवरी 1995 में एचडीएफसी इक्विटी फंड के नाम से हुई थी। यह फंड बाजार मूल्यांकन और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग श्रेणियों में निवेश का अनुपात बदलता है, हालांकि इसका झुकाव आमतौर पर बड़ी कंपनियों की ओर रहता है। फंड की रणनीति मजबूत कारोबारी आधार और लंबी अवधि में विकास की संभावना वाली कंपनियों में निवेश करने की है। पिछले तीन वर्षों में इसने 16.19 प्रतिशत सीएजीआर से रिटर्न दिया, जबकि निफ्टी 500 टीआरआई का रिटर्न 10.85 प्रतिशत रहा। इसका मानक विचलन 12.37 था, जो तीनों फंडों में सबसे कम है। शार्प अनुपात 0.22 और सॉर्टिनो अनुपात 0.40 रहा। ये आंकड़े इसकी जोखिम-समायोजित प्रदर्शन क्षमता को दर्शाते हैं। सितंबर 2026 तक इसका एयूएम करीब 1.1 लाख करोड़ रुपये था। पोर्टफोलियो में आमतौर पर 45-55 शेयर रहते हैं। आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक, एचडीएफसी बैंक, एसबीआई और कोटक महिंद्रा बैंक इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में शामिल थे। इसका करीब 70-75 प्रतिशत निवेश बड़ी कंपनियों में रहा। फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश का बड़ा फायदा यह है कि फंड प्रबंधक बाजार की परिस्थितियों के अनुसार बड़ी, मझोली और छोटी कंपनियों में निवेश बदल सकते हैं।

खबर संक्षेप

मोटरसाइकिल चोरी का आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। थाना सदर फतेहाबाद पुलिस ने मोटरसाइकिल चोरी के एक मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस के हत्थे चढ़े आरोपी की पहचान संदीप उर्फ कालू पुत्र सुरजीत निवासी स्वामी नगर, फतेहाबाद के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। थाना सदर फतेहाबाद के प्रभारी उपनिरीक्षक सुमित ने बताया कि कैथल निवासी लालूराम ने पुलिस को शिकायत दी थी। शिकायतकर्ता के अनुसार, वह गत 13 सितंबर को अपनी हीरो स्प्लेंडर प्लस मोटरसाइकिल पर सवार होकर गांव दरियापुर में अपने एक रिश्तेदार से मिलने गया था। रात के समय उसने मोटरसाइकिल घर के बाहर खड़ी की थी, लेकिन अगली सुबह जब वह उठा तो बाइक वहां से गायब थी। आसपास और अपने स्तर पर काफी तलाश करने के बाद भी जब कोई सुराग नहीं लगा, तो उसने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई।

इग्नू की इंडक्शन मीटिंग महिला कॉलेज में आज

फतेहाबाद। चौधरी मनीराम गोदारा राजकीय महिला महाविद्यालय, भोडियां खेड़ा स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अध्ययन केंद्र में जुलाई 2026 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए 15 नवंबर रविवार को सुबह 10 बजे इंडक्शन मीटिंग का आयोजन किया जाएगा। अध्ययन केंद्र के कोऑर्डिनेटर डॉ. गुरनाम चंद ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा से जुडने वाले विद्यार्थियों को इग्नू की कार्यप्रणाली, पठन-पाठन व्यवस्था, असाइनमेंट जमा करने की प्रक्रिया, परीक्षा पैटर्न और विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध करवाई जाने वाली विभिन्न शैक्षणिक सुविधाओं बारे अवगत करवाया जाएगा। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही विद्यार्थियों के लिए यह परिचय सत्र अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा, जिससे वे अपनी पढ़ाई की रूपरेखा स्पष्ट कर सकेंगे और उन्हें किसी भी प्रकार की तकनीकी या शैक्षणिक दुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

वैरागन अंतिम जैन की दीक्षा पर शोभायात्रा आज

सिरसा। जैन धर्म की श्रद्धा, भक्ति और त्याग की परंपरा को समर्पित वैरागन अंतिम जैन के दीक्षा महोत्सव के उपलक्ष्य में 15 नवंबर को कालांवाली में भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। इस आयोजन को लेकर जैन समाज में विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है। एस.एस.जैन सभा कालांवाली के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में जैन संतों एवं महासाध्वियों का पावन सानिध्य प्राप्त होगा। शोभायात्रा में महासाध्वी श्रेष्ठा महाराज, महासाध्वी चंदना महाराज सहित महासाध्वी कर्णिका, महासाध्वी प्रियाशी तथा महासाध्वी सीयल ठाणे-5 का सानिध्य रहेगा। शोभायात्रा 15 नवंबर को सुबह करीब 8 बजे महाजन धर्मशाला से प्रारंभ होगी। यह शोभायात्रा शहर के विभिन्न बाजारों से होते हुए जैन सभा पहुंचेगी। शोभायात्रा में धार्मिक झांकियां एवं भक्ति का वातावरण देखने को मिलेगा। शोभायात्रा को प्रारंभ उपाध्यक्ष मास्टर योगेश जैन करेंगे।

15 हजार मुआवजे को नाकाफी बताते हुए एक लाख रुपये प्रति एकड़ देने की मांग

फसलें बर्बाद, नहरें सूखी और मुआवजे पर सवाल, किसानों का डेरा बरकरार

- गेहूं की बिजाई के लिए दो सप्ताह लगातार नहरी पानी छोड़ने पर दिया जोर

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद



फतेहाबाद। डीसी कार्यालय के बाहर धरना देकर बैठे किसान। *फोटो : हरिभूमि*

खेतों में फसल का नुकसान, सिंचाई के लिए नहरी पानी की किल्लत और मुआवजे की राशि को लेकर किसानों की नाराजगी अब फतेहाबाद के लघु सचिवालय के बाहर जारी पक्के मोर्चे में साफ नजर आ रही है। पगड़ी संभाल जट्टा किसान संघर्ष समिति के नेतृत्व में 3 नवंबर से शुरू हुआ किसानों का अनिश्चितकालीन धरना लगातार जारी है। शनिवार को भी फतेहाबाद, सिरसा और हिसार जिलों के विभिन्न गांवों से पहुंचे किसानों ने धरने में भाग लेकर अपनी मांगों को प्रमुखता से उठाया। धरने की अध्यक्षता छबील दास जाखल ने की। किसानों का कहना है कि बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से फसलों को हुए नुकसान की भरपाई के लिए सरकार की ओर से पांच एकड़ तक 15 हजार रुपये मुआवजे का प्रावधान किसानों के वास्तविक नुकसान के मुकाबले बेहद कम है। पगड़ी संभाल जट्टा किसान संघर्ष समिति के प्रदेश अध्यक्ष मनदीप नथवान और छबील दास जाखल ने कहा कि प्रभावित किसानों को एक लाख रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से मुआवजा दिया जाए और राशि सीधे उनके बैंक खातों में पहुंचाई जाए।

नहरों में दो सप्ताह लगातार पानी छोड़ना जरूरी

किसानों के रोष की दूसरी बड़ी वजह नहरी पानी की आपूर्ति है। किसान नेताओं ने कहा कि महीने में केवल एक सप्ताह नहरी पानी मिलने और शेष 21 दिन नहरें बंद रहने से खेती का पूरा गणित बिगड़ रहा है। अब गेहूं की बिजाई का समय है, ऐसे में सिंचाई के लिए कम से कम दो सप्ताह लगातार नहरों में पानी छोड़ा जाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि खेती पहले ही मौसम की मार झेल रही है और अब पानी की अनियमित आपूर्ति किसानों की मुश्किलें और बढ़ा रही है। धरने पर मौजूद किसानों ने फतेहाबाद के डीसी डॉ. विवेक भारती के रवैये पर भी नाराजगी जताई और उनके तबादले की मांग उठाई। किसान नेताओं का कहना है कि उनकी समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर होना चाहिए, लेकिन अब तक उन्हें अपनी मांगों पर ठोस कार्रवाई की अपेक्षा है।

इन्होंने किया संबोधित

धरने को सुभाष रामपुरिया, ओमप्रकाश जोगीवाला, मांगेराम जोगीवाला, प्रवीन, चाहरवाला से दरिया सिंह, सुनील कुमार, विनोद, चूली कलां से सतीश, बलराज, गोरखपुर से जयबीर, अमन गोदारा, प्रकाश ममेरा और सुरेश ढाका ने भी संबोधित किया। धरने में गांव जोगीवाला, चाहरवाला, रामपुरिया, बगडिय़ा, कुम्हारिया, ढाबी, दैयड़, जांडवाला और खाबड़ा सहित फतेहाबाद व सिरसा जिले के विभिन्न गांवों तथा हिसार जिले के चूली कलां और चूली खुर्द से काफी संख्या में किसान पहुंचे। किसान नेताओं ने बताया कि 16 नवंबर को शहीद करतार सिंह सराभा के शहादत दिवस पर पक्के मोर्चे पर नशा विरोधी दिवस के रूप में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस दौरान नशे के खिलाफ जागरूकता फैलाने के साथ समाज में फैली अन्य बुराइयों के खिलाफ भी आवाज उठाई जाएगी।

प्रभु पर विश्वास रखने वाला कठिन समय में भी विचलित नहीं होता : स्वामी राजदास

- श्री दुर्गा मंदिर में संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के पहले दिन उमड़े श्रद्धालु, प्रभु की महिमा का किया गुणगान

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद



फतेहाबाद। श्री दुर्गा मंदिर में कथा करते स्वामी राजदास महाराज।

श्री कृष्ण प्रणामी सेवा समिति, फतेहाबाद की ओर से आयोजित संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के प्रथम दिन श्री दुर्गा मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। कैमरी आश्रम, हिसार से आए कथा व्यास भागवत वाचस्पति श्री श्री 108 स्वामी राजदास महाराज ने अपने मधुर प्रवचनों और संगीतमय शैली में भगवान श्रीकृष्ण की महिमा का गुणगान कर श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। कथा के दौरान भक्तिमय वातावरण बना रहा और श्रद्धालु भजनों पर झूमते नजर आए। स्वामी राजदास महाराज ने श्रीमद्भागवत कथा का महत्व बताते हुए कहा कि श्रीमद्भागवत केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानव जीवन को सही दिशा देने वाला दिव्य मार्गदर्शन है। इसके श्रवण मात्र से मनुष्य के हृदय में भक्ति, प्रेम और सद्भाव की भावना जागृत होती है। भगवान श्रीकृष्ण की लीलाएं हमें प्रेम, करुणा, त्याग और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य को अपने जीवन में सदैव भगवान का स्मरण करना चाहिए। संसार में सुख-दुख आते-जाते रहते हैं, लेकिन जो व्यक्ति प्रभु पर विश्वास रखता है, वह कठिन परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता। भगवान की भक्ति मन को शांति औरआत्मा को संतोष प्रदान करती है। राजदास महाराज ने कहा कि भागवत कथा का श्रवण करने से मनुष्य के भीतर अच्छे विचारों का संचार होता है और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आता है।

प्राचीन श्री श्याम मंदिर का कार्तिक महोत्सव 18 नवंबर से



सिरसा। प्राचीन श्री श्याम मंदिर का 63वां कार्तिक महोत्सव 18 नवंबर से 21 नवंबर तक मंदिर परिसर में धूमधाम व हर्षोल्लास से मनाया जाएगा। महोत्सव की तैयारियों को लेकर शनिवार को मंदिर के संरक्षक तारा देवी व मनीष सिंगला ने बताया कि 18 नवंबर की प्रातः श्री गणेश पूजन व श्री श्याम ज्योत प्रज्जवलन होगा। इसी दिन दोपहर 2 बजे श्री श्याम निशान ध्वजा रथयात्रा निकाली जाएगी। इस मौके पर ओडिशा के पूर्व राज्यपाल प्रो. गणेशीलाल व मनीष सिंगला की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी। शोभायात्रा को हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविंद्र सिंह कल्याण शोभायात्रा को झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। 19 नवंबर को सुबह 11 बजे कल्याणकारी श्री श्याम महामंत्र जाप मंदिर प्रांगण में होंगे। इसी प्रकार 20 नवंबर को प्रातः 5.30 बजे श्री श्याम नाम प्रभात फेरी निकाली जाएगी। प्रातः 8.30 बजे श्री राधाकृष्ण नृत्य महारास प्रस्तुत किया जाएगा। इसी दिन रात्रि 8.15 बजे श्री श्याम भजन अमृत वर्षा आयोजित की जाएगी जिसमें मुख्य यजमान प्रो. गणेशीलाल व उनके सुपुत्र श्याम भक्त मनीष सिंगला होंगे। इस दौरान कोलकाता से प्रकाश मिश्रा व श्वेता अग्रवाल भजनों की प्रस्तुति करेंगी। इसी प्रकार 21 नवंबर को द्वादशी के मौके पर श्री श्याम हवन यज्ञ आयोजित किया जाएगा।

उठान के चलते रविवार को किसान मण्डी में न लाएं डुप्लीकेट बासमती : व्यापार मंडल

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

फतेहाबाद की अनाज मंडी में डुप्लीकेट बासमती की लगातार बढ़ रही आवक के चलते मुच्छल मंडी परिसर पूरी तरह फसल से भर गया है। मंडी में डुप्लीकेट बासमती, 1509, 1121 और मुच्छल धान की निजी व्यापारियों की ओर से खरीद की जा रही है। इसके चलते मंडी में धान की ढेरियां और ट्रॉलियां बड़ी संख्या में पहुंचने से जगह की कमी हो गई है। स्थिति को देखते हुए रविवार 15 नवंबर को मंडी में धान की बोली नहीं होगी। इस दिन केवल लोडिंग और उठान का कार्य किया जाएगा। व्यापार मंडल अनाज मंडी फतेहाबाद की ओर से सभी आढ़तियों को सूचना जारी कर किसानों को रविवार को धान लेकर मंडी नहीं आने के लिए कहने की अपील की गई है। मंडल ने स्पष्ट किया है कि रविवार को मंडी में खरीद-बिक्री की बोली का कार्य बंद रहेगा और केवल पहले से खरीदे गए धान की लोडिंग की जाएगी। परमल धान की आज से खरीद बंद हो जाएगी।

व्यापार मंडल की ओर से जारी सूचना में आढ़तियों से कहा गया है कि वे अपने किसानों और जमींदारों को पहले ही सूचित कर दें कि रविवार को शाम 5 बजे के बाद ही धान से भरी ट्रॉलियां मंडी में लेकर आएं। इससे पहले नई फसल की आवक नहीं करवाने का आग्रह किया गया है। मंडी में पहले से ही धान की भारी मात्रा मौजूद होने के कारण नई ट्रॉलियों के आने से व्यवस्था प्रभावित हो सकती है।

सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने रेलवे स्टेशन अधीक्षक को मांगपत्र सौंपा

सिरसा। सेवानिवृत्त रेल कर्मचारी एसोसिएशन ने मांगों को लेकर स्टेशन अधीक्षक हरीश कुमार अरोड़ा को ज्ञापन सौंपा गया। इससे पूर्व सभी कर्मचारी रेलवे स्टेशन पर एकत्रित हुए। ज्ञापन कार्यक्रम की अध्यक्षता शाखा सचिव लक्ष्मीनारायण खर्रा ने की। लक्ष्मीनारायण ने कहा कि कर्मचारी लंबे समय से अपनी मांगों को लेकर संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन मांगें अभी तक ठंडे बस्ते में ही है। अगर केंद्र सरकार की ओर से मांगों को गंभीरता से नहीं लिया गया तो आगामी संघर्ष की रणनीति बनाई जाएगी। इस मौके पर सर्वसम्मति से आनंद स्वरूप रोहिल्ला को रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन के रिक्त पद पर सिरसा शाखाध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस मौके पर हनुमान प्रसाद एजीएम, एमआर वर्मा डीजीएम, मदनलाल, होशियार सिंह रोडवेज से, त्रिलोकचंद एमईएस, एमआर वशिष्ठ डीजीएम, रमन सिंह शेखावत जेई, विनोद कुमार, अर्जुन शर्मा, मनोहरलाल लूथरा, सुरेश बाबू, साधुराम, चंदूलाल, आनंद स्वरूप, सुभाष, चिरंजीलाल सहित सैकड़ों कर्मचारी उपस्थित थे।



ये है प्रमुख मांगें

केंद्र सरकार ने 8वें वेतन आयोग में एक जनवरी 2026 से पहले सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों की पेंशन का पुनरनिर्धारण नहीं करने का प्रावधान किया है, जोकि होना चाहिए। एसोसिएशन की मांग है कि वेतन आयोग के विचारणीय विषयों में संशोधन कर पेंशनर्स के हितों की रक्षा की जाए और पूर्ववर्ती वेतन आयोगों की तरह वर्तमान पेंशन के पुनरनिर्धारण को शामिल किया जाए। अतिरिक्त पेंशन 54 वर्ष की आयु पर 5 प्रतिशत से शुरू करते हुए 70 वर्ष पर 10 प्रतिशत, 75 वर्ष पर 15 प्रतिशत, 80 वर्ष पर 20 प्रतिशत, 85 वर्ष पर 30 प्रतिशत, 90 वर्ष पर 40 प्रतिशत, 95 वर्ष पर 50 प्रतिशत और 100 वर्ष पर 100 प्रतिशत की जाए। फिक्स मेडिकल भत्ता एक हजार रुपए से बढ़ाकर तीन हजार रुपए किया जाए।

न्यूज डायरी



बाल दिवस पर विद्यार्थियों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

सिरसा। बाल दिवस के अवसर पर शाह सतनाम जी कॉलेज ऑफ एजुकेशन सिरसा के विद्यार्थियों ने एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया। कार्यक्रम की शुरूआत महाविद्यालय परिसर में केक सेरेमनी के साथ हुई। इसके बाद विद्यार्थियों ने एमएसजी रिजॉर्ट, सेवन वंडर्स, आयुर्वेद चिकित्सालय एवं जिम का भ्रमण कर विभिन्न गतिविधियों और संस्थानों की कार्यप्रणाली को करीब से जाना। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने संबंधित स्थलों की विशेषताओं, उपयोगिता और कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी हासिल की। एमएसजी रिजॉर्ट एवं सेवन वंडर्स के भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने मनोरंजन, कला और स्थापत्य से जुड़ी जानकारी प्राप्त की। वहीं आयुर्वेद चिकित्सालय में भारतीय चिकित्सा पद्धति, प्राकृतिक उपचार और स्वस्थ जीवनशैली के महत्व को समझा। जिम के भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों को नियमित व्यायाम, शारीरिक फिटनेस और स्वस्थ दिनचर्या के प्रति जागरूक किया गया। महाविद्यालय की प्रशासिका डॉ. चरणप्रीत कौर और प्राचार्या डॉ. रजनी बाला ने कहा कि बाल दिवस बच्चों के अधिकारों, खुशियों और उज्ज्वल भविष्य को समर्पित है। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों को कक्षा-कक्ष के ज्ञान के साथ व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान करते हैं।



प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की जयंती मनाई

फतेहाबाद। जिला कांग्रेस कार्यालय फतेहाबाद में आज कांग्रेसजनों ने देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की जयंती श्रद्धाभाव के साथ मनाई। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष अरविन्द शर्मा व कांग्रेसजनों पंडित जवाहर लाल नेहरू जी को पुष्प अर्पित कर भावांजलि दी तथा उनके जीवन काल को याद किया। अरविन्द शर्मा ने कहा कि जवाहर लाल नेहरू ने देश की आजादी के संघर्ष में हिस्सा लिया और आजादी के बाद देश के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में देश को उन्नति के पथ पर आगे लेकर चले। उनके समर्पण और आदर्शों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। देशभक्ति की भावना उनमें कूट कूट कर भरी थी। नेहरू जी को बच्चों से बहुत लगाव था, इसलिए भी उनके जन्मदिन को आज 14 नवम्बर को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर कांग्रेस के जिला महासचिव पूनम रत्ती, विनय शर्मा, श्याम सुंदर बंसल, गुरजंट सिंह सीता राम बैनीवाल एडवोकेट, ब्रहमानंद सोनी प्रधान सेवा दल, राम सिंह बरोटा, रणजीत सिंह फुलां, सतपाल चावला टोहाना, घनश्याम आनन्द, विपिन कम्बोज बीघड़, बीरबल नेहरा, राज करण फौजी सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।



खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन

रतिया। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार, मेरा युवा भारत की ओर से चलाए जा रहे नशा मुक्त युवा भारत विकसित भारत अभियान के तहत आज जाखन दादी स्टेडियम में खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ गुरचरण सिंह खोखर, जिला अध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा फतेहाबाद तथा शर्मा चंद लाली, जिला अध्यक्ष संत शिरोमणि नामदेव सभा फतेहाबाद ने संयुक्त रूप से किया। खिलाडियों एवं युवाओं को संबोधित करते हुए अतिथियों ने कहा कि खेल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। खेलों से जहां शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है, वहीं युवाओं में अनुशासन, आत्मविश्वास, आपसी भाईचारे और टीम भावना का भी विकास होता है। उन्होंने कहा कि आज के समय में युवाओं को नशे जैसी सामाजिक बुराई से दूर रखने के लिए खेलों को बढ़ावा देना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि नशा व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार और समाज को प्रभावित करता है। इसके मुकाबले खेल युवाओं को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। युवाओं को चाहिए कि वे अपना अधिक से अधिक समय खेल गतिविधियों, शिक्षा और रचनात्मक कार्यों में लगाएं तथा नशामुक्त एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। इस अवसर पर खो-खो, वॉलीबॉल, 400 मीटर दौड़, 800 मीटर दौड़, ऊंची कूद और लंबी कूद सहित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

सैलजा के कार्यों की सराहना गर्व का विषयः नेहरा

सिरसा। कांग्रेस नेता संदीप नेहरा ने कहा कि कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा अपनी हालिया प्रकाशित आत्मकथा बिलोंनिंगः- ए जर्नी ऑफ लव में सिरसा से सांसद कुमारी सैलजा के समर्पण, संघर्ष और पार्टी के प्रति उनके योगदान की खुलकर सराहना करने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं और समर्थकों में भारी उत्साह है। संदीप नेहरा ने कहा कि सोनिया गांधी ने अपनी पुस्तक के माध्यम से देश के सामने यह सत्य रखा है कि कठिन राजनीतिक दौर और देशव्यापी यात्राओं के दौरान कुमारी सैलजा हमेशा एक मजबूत स्तंभ, मद्ददगार और विश्वसनीय साथी के रूप में पार्टी के साथ खड़ी रहीं। संदीप नेहरा ने कहा कि कुमारी सैलजा ने सदैव समाज के हर वर्ग, गरीब, किसान, मजदूर और वंचितों की आवाज को बुलंद किया है। पार्टी हाईकमान और सोनिया गांधी की नजरों में उनका यह सम्मान हर कांग्रेस कार्यकर्ता का मनोबल बढ़ाने वाला है।



प्रशिक्षण से उद्यमिता तक — अब गांव की महिलाएं संभालेंगी दूध संग्रहण केंद्र की कमान

नाबार्ड की पहल : एसएचजी महिलाओं की आजीविका के लिए डेमोनस्ट्रेशन यूनिट एवं दुग्ध संग्रहण केंद्र स्थापित

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद



फतेहाबाद। गोरखपुर में स्थापित डेमोनस्ट्रेशन यूनिट एवं दुग्ध संग्रहण केंद्र का उद्घाटन करते अतिथिगण। *फोटो : हरिभूमि*

ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक अभिनव पहल करते हुए नाबार्ड द्वारा जिला फतेहाबाद के गांव गोरखपुर में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की आजीविका संवर्धन हेतु डेयरी गतिविधि के अंतर्गत डेमोनस्ट्रेशन यूनिट एवं दुग्ध संग्रहण केंद्र का उद्घाटन किया गया।

वीटा मिल्क प्लांट के समन्वय से स्थापित यह केंद्र संभवतः हरियाणा में अपनी तरह की पहली पहल है, जिसका संचालन स्वयं सहायता समूह की महिलाएं करेंगी। कार्यक्रम में हरियाणा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अधिकारी, वीटा मिल्क प्लांट के प्रतिनिधि, ग्राम पंचायत के सदस्य, परियोजना अधिकारी, मास्टर ट्रेनर, कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन, स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

जिला विकास प्रबंधक करण रहे मुख्य अतिथि

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नाबार्ड, फतेहाबाद के जिला विकास प्रबंधक करण ने कहा कि नाबार्ड ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की क्षमता निर्माण, कौशल विकास एवं स्थायी आजीविका के अवसर सृजित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण के साथ-साथ महिलाओं को व्यावहारिक संसाधनों एवं बाजार से जोडना आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। वीटा मिल्क प्लांट के सहयोग से गोरखपुर में स्थापित इस केंद्र के माध्यम से महिलाएं दूध संग्रहण एवं केंद्र के संचालन का कार्य संभालेंगी जिससे प्रशिक्षित महिलाओं को डेयरी उद्यम स्थापित करने एवं अपनी आय बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगी। गांव के सरपंच श्री मनदीप योगी ने एसएचजी महिलाओं को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं और कहा कि महिलाओं की आजीविका को सुदृढ़ करने के लिए नाबार्ड की यह पहल सराहनीय है। इससे महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनेंगी तथा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगी। नाबार्ड के प्रायोजन एवं विश्वास चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में ट्रस्ट के सचिव विनीत छाबड़ा ने बताया कि आजीविका एवं उद्यम विकास कार्यक्रम के अंतर्गत भूना ब्लॉक की 120 स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को डेयरी एवं दुग्ध उत्पाद गतिविधि में निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। प्रशिक्षण के उपरांत महिलाओं को वास्तविक व्यवसाय से जोडने के उद्देश्य से इस डेमोनस्ट्रेशन यूनिट की स्थापना की गई है।

समर्पण वेलफेयर ट्रस्ट के मंच पर दिया नशे के विरुद्ध संदेश

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

समर्पण वेलफेयर ट्रस्ट एवं अमित हेल्पलाइन के संयुक्त तत्वावधान में 13वां हेल्थ, वेल्थ एंड लीगल अवेयरनेस कैंप हिसार रोड स्थित झूंथरा धर्मशाला में शुरू हुआ। कैंप का शुभारंभ चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय के कुलपति विजय कुमार ने किया। इस दौरान केएल थिएटर द्वारा नशे जैसी सामाजिक बुराई पर आधारित लघु नाटिका नशा एक अभिशाप का मंचन किया गया। कलाकारों ने अपनी प्रभावशाली प्रस्तुति के माध्यम से नशे के दुष्परिणामों को दर्शाते हुए उपस्थित लोगों को भावुक और जागरूक किया।

ट्रस्ट की ओर से जरूरतमंद एवं असहाय लोगों की सहायता के उद्देश्य से टेंपरेरी व्हीलचेयर प्रोजेक्ट का भी शुभारंभ किया गया। सीडीएलयू के कुलपति विजय कुमार ने व्हीलचेयर को जनसेवा के लिए समर्पित करते हुए इस पहल की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि बच्चों और युवाओं को माता-पिता की सेवा, शिक्षा और सफलता प्राप्त करने का जुनून हो जाए तो यह उनके जीवन को नई दिशा दे सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा से बड़ा कोई नशा नहीं है। हमें जीवन में आने वाली चुनौतियों का डटकर सामना करना चाहिए और हमेशा सकारात्मक लक्ष्यों की ओर आगे बढऩा चाहिए। इस अवसर पर राजेंद्रा स्कूल ऑफ फार्मेसी के चेयरमैन एनके गुप्ता, नेशनल कॉलेज फॉर वुमेन के प्रिंसिपल डॉ. शत्रुजीत कपूर, दिव्या शर्मा, अंजू शर्मा तथा व्यापार मंडल के जिला प्रधान हीरालाल शर्मा, अमित गोयल एडवोकेट, अमित लढ़ा, प्रमोद बंसल, भूपेश मित्तल, यशपाल बंसल, बृज बंसल, इंद्र गोयल, कमल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।



सिरसा। नशे के खिलाफ नाटक का मंचन करते कलाकार।

खबर संक्षेप

इग्नू स्टडी सेंटर में इंडक्शन मीट आज

सिरसा। राजकीय महिला महाविद्यालय सिरसा में संचालित इग्नू अध्ययन केंद्र में 15 नवंबर को इंडक्शन मीट आयोजित की जाएगी। इग्नू अध्ययन केंद्र के कोऑर्डिनेटर डॉ. विक्रमजीत सिंह ने बताया कि बीते माह जुलाई 2026 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए इंडक्शन मीट का आयोजन महाविद्यालय में किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इंडक्शन मीट का उद्देश्य नवीन प्रवेशित विद्यार्थियों को इग्नू के विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों व अध्ययन पद्धति की जानकारी दी जाएगी।

बाइक चोरी का आरोपी वाहन सहित गिरफ्तार

सिरसा। पुलिस ने बाइक चोरी के आरोपी को चोरीशुदा बाइक सहित गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सतपाल निवासी गांव किरमारा जिला हिसार के रूप में हुई है। एबीवीटी स्टाफ प्रभारी ने बताया कि गांव चाडीवाल निवासी बजरंग ने शिकायत सिरसा के जनता अस्पताल के बाहर से उसकी बाइक चोरी हो गई है। शिकायत के आधार पर शहर थाना सिरसा में मामला दर्ज कर जांच शुरू की थी।

साइबर स्मार्ट एंड साइबर सेफ विषय पर व्याख्यान

सिरसा। चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय सिरसा के यूनिवर्सिटी स्कूल फॉर ग्रेजुएट स्टडीज में एनईपी सारथी की गतिविधियों के अंतर्गत 'साइबर स्मार्ट एंड साइबर सेफ' विषय पर जागरूकता व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता प्रीति सांगवान ने सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग पर जोर देते हुए कहा कि फोटो, लोकेशन और फोन नंबर जैसी निजी जानकारियां सार्वजनिक करना साइबर अपराधियों को अवसर प्रदान कर सकता है।

रूपावास के विद्यार्थियों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

सिरसा। किताबी ज्ञान से आगे बढ़कर व्यवहारिक अनुभव लेने के उद्देश्य से पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रूपावास के विद्यार्थियों ने लघु सचिवालय सिरसा और चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय का एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया। भ्रमण के पहले चरण में विद्यार्थी लघु सचिवालय पहुंचे, जहां उन्होंने नगराधीश से मुलाकात की।

गग्गी खोखर के शतक से नीलकंठ वॉरियर्स ने दर्ज की शानदार जीत

रतिया। राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल में चल रही रतिया प्रीमियर लीग सीजन-2 के तहत शनिवार को खेले गए पहले मुकाबले में नीलकंठ वॉरियर्स ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कनाडियन ब्रदर्स को 61 रन से हरा दिया। नीलकंठ वॉरियर्स की जीत के हीरो गग्गी खोखर रहे, जिन्होंने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 118 रन की शतकीय पारी खेली।
आयोजनकर्ता सम्राट सग्गू ने बताया कि मुकाबले में टॉस जीतकर कनाडियन ब्रदर्स ने पहले गेंदबाजी करने का निर्णय लिया। पहले बल्लेबाजी करने उतरी नीलकंठ वॉरियर्स की टीम ने निर्धारित 20 ओवर में शानदार बल्लेबाजी करते हुए 212 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया।

रत्न जड़ित सिंहासन पर विराजेंगे बाबा श्याम

सिरसा। रानियां रोड स्थित श्री खाटू श्याम धाम में 20 व 21 नवंबर को कार्तिक सुदी एकादशी के उपलक्ष्य में दो दिवसीय श्री श्याम जन्मोत्सव बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से मनाया जाएगा। इस बार महोत्सव का सबसे बड़ा आकर्षण बाबा श्याम के रत्न जड़ित भव्य सिंहासन का अनावरण होगा। मंदिर के सदस्य दीपेश गोयल ने बताया कि इस विशेष सिंहासन पर बाबा श्याम विराजमान होंगे। आयोजकों के अनुसार, इस प्रकार के रत्न जड़ित सिंहासन का अनावरण पहली बार सिरसा में किया जा रहा है। जन्म महोत्सव को लेकर मंदिर में विशेष तैयारियां की जा रही हैं। पूरे मंदिर परिसर को कोलकाता से मंगवाए गए आकर्षक फूलों और भव्य विद्युत लडिय़ों से सजाया जाएगा। 20 नवंबर को शहर के साथ-साथ आसपास के गांवों से भी श्रद्धालु बाबा के दरबार में पहुंचकर ध्वजा और नारियल अर्पित करेंगे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 8295154800, 9315429403, 9253681005

78,915 किसानों ने बेची फसल, 1312 करोड़ का भुगतान

आज खरीद का अंतिम दिन, मंडियों में अब तक पहुंचा 7.85 लाख टन धान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

जिले की अनाज मंडियों में धान खरीद का आज अंतिम दिन है, लेकिन मंडियों में पहुंची धान की पूरी खेप का उठान अभी नहीं हो पाया है। 13 नवंबर तक जिले में कुल 7 लाख 85 हजार 749 मीट्रिक टन धान की आवक दर्ज की गई है। इसमें से सरकारी खरीद एजेंसियां 7 लाख 51 हजार 93 मीट्रिक टन धान खरीद चुकी हैं। इसके बावजूद खरीदे गए धान में से 1 लाख 93 हजार 34 मीट्रिक टन का उठान होना अभी बाकी है। ऐसे में खरीद का निर्धारित समय पूरा होने के बाद भी मंडियों से धान उठान की चुनौती बनी रहेगी। सरकारी खरीद रिपोर्ट के अनुसार, 13 नवंबर को तीनों खरीद एजेंसियों ने कुल 21,439 मीट्रिक टन धान की खरीद की। अब तक 78,915 किसानों की फसल सरकारी एजेंसियों ने खरीदी है। कुल खरीद के मुकाबले 5 लाख 58 हजार 59 मीट्रिक टन धान का उठान हो चुका है, जो करीब 74 प्रतिशत है। यानी खरीदे गए धान का लगभग 26 प्रतिशत हिस्सा अभी मंडियों में उठान का इंतजार कर रहा है।



फतेहाबाद। उठान के साथ ही खाली होने लगी मण्डी। फोटो : हरिभूमि

एक नजर में धान खरीद की स्थिति

कुल आवक	: 7,85,749 मीट्रिक टन
कुल सरकारी खरीद	: 7,51,093 मीट्रिक टन
13 नवंबर की खरीद	: 21,439 मीट्रिक टन
कुल उठान	: 5,58,059 मीट्रिक टन
उठान के लिए शेष	: 1,93,034 मीट्रिक टन
किसानों की संख्या	: 78,915
कुल भुगतान	: 1312.06 करोड़ रुपये
उठान का प्रतिशत	: 74 प्रतिशत

फूड एजेंसी खरीद व उठान में सबसे आगे

जिले में धान खरीद के मामले में खाद्य एवं आपूर्ति विभाग सबसे आगे रहा है। विभाग ने अब तक 3 लाख 13 हजार 21 मीट्रिक टन धान खरीदा है और 2 लाख 27 हजार 297 मीट्रिक टन का उठान किया है। वहीं हैफेड ने 2 लाख 60 हजार मीट्रिक टन खरीद के मुकाबले 2 लाख 4 हजार 739 मीट्रिक टन धान का उठान किया है। हरियाणा वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन ने 1 लाख 78 हजार 73 मीट्रिक टन धान खरीदा है, जिसमें से 1 लाख 26 हजार 23 मीट्रिक टन का उठान हुआ है।

किसानों को 1312 करोड़ रुपये का भुगतान

किसानों को 1312.06 करोड़ रुपये जारी किए जा चुके हैं। यह कुल खरीद का करीब 71 प्रतिशत है। वहीं कुल उठान के मुकाबले भुगतान का प्रतिशत 96 दर्ज किया गया है। एजेंसीवार आंकड़ों में फूड विभाग ने 548.13 करोड़, हैफेड ने 491.93 करोड़ और वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन ने 272 करोड़ रुपये का भुगतान किया है।

मौसम अलर्ट से मंडी प्रशासन सतर्क
धान के उठान में तेजी लाने के निर्देश



रानियां। मौसम विभाग की ओर से बारिश का अलर्ट जारी होने और अचानक मौसम का मिजाज बदलने से रानियां अनाज मंडी में धान को भीगने से बचाने के लिए मार्केट कमेटी प्रशासन सतर्क हो गया है। मंडी में खुले में पड़ी धान की फसल को सुरक्षित रखने और बकाया उठान में तेजी लाने के लिए अधिकारियों ने सक्रियता दिखाई है। शनिवार को मार्केट कमेटी के सचिव एवं कार्यकारी अधिकारी सुरेंद्र सैन तथा मंडी सुपरवाइजर ज्योति रानी ने अनाज मंडी का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने निचले स्थानों पर पड़ी धान की ढेरियों को ऊंचे स्थानों पर लगवाने के निर्देश दिए तथा निचले इलाकों में रखी धान से भरी बोरियों का मौके पर पहुंचकर उठान करवाया। साथ ही आढ़तियों को धान की सुरक्षा के लिए तिरपाल, पॉलिथीन और क्रेट की पर्याप्त व्यवस्था रखने के निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि रानियां अनाज मंडी में अब तक 1,00,633 क्विंटल परमल धान की आवक हो चुकी है, जिसमें से 98,135 क्विंटल धान न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदा जा चुका है। परमल धान की सरकारी खरीद का केवल एक दिन शेष रह गया है, जबकि हैफेड की ओर से खरीदे गए 12,503 क्विंटल धान का उठान अभी बाकी है। पिछले करीब एक सप्ताह से परमल धान की आवक कम हुई है, लेकिन उठान की गति बेहद धीमी बनी हुई है। इसके चलते किसानों का भुगतान भी अटका हुआ है। मार्केट कमेटी सचिव ने हैफेड के अधिकारियों को बकाया धान का जल्द उठान करवाने के निर्देश दिए।

गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व पर संगत को किया निहाल



रतिया। कार्यक्रम में शब्द कीर्तन करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

■ अकाल अकादमी दशमेश नगर में श्रद्धा व उत्साह से मनाया पर्व
■ गुरुबाणी का हुआ पाठ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रतिया

सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी का 557वां प्रकाश पर्व कलगीधर ट्रस्ट बड़ू साहिब द्वारा संचालित अकाल अकादमी दशमेश नगर, चंदड़ कलां, टोहाना में बड़ी श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस पावन अवसर पर विद्यालय परिसर में विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों की धूम रही। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यार्थियों द्वारा मधुर शब्द गायन से किया गया। इसके पश्चात बच्चों ने कविशरी, कविताओं और धार्मिक प्रस्तुतियों के माध्यम से गुरु नानक देव जी के जीवन दर्शन तथा मानवता, प्रेम, समानता और सेवा के संदेश को बेहद सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया, जिसने उपस्थित संगत को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का समापन गुरु साहिब की महिमा में आरती गायन के साथ हुआ।

गुरु साहिब के बताए मार्ग पर चलें

विद्यालय की प्रधानाचार्या सुमन श्योराण ने अपने संबोधन में श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को गुरु साहिब के बताए मार्ग पर चलने, सत्य बोलने, निस्वार्थ सेवा करने तथा सभी धर्मों और मनुष्यों का सम्मान करने के लिए प्रेरित किया। गुरुपर्व के उपलक्ष्य में विद्यालय परिसर में एक विशेष प्रदर्शनी भी लगाई गई। इसमें विद्यार्थियों ने विज्ञान के नवीन प्रयोगों, कला एवं शिल्प के साथ-साथ भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत और प्राचीन काल में उपयोग होने वाली पारंपरिक वस्तुओं को आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किया। इस प्रदर्शनी ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता और सांस्कृतिक विरासत के प्रति उनके लगाव को बखूबी दर्शाया। इस अवसर पर गुरु का अटूट लंगर भी बरताया गया, जिसे संगत ने श्रद्धापूर्वक ग्रहण किया।

नामदेव भवन की रजिस्ट्री करवाने पर जोर

■ संत शिरोमणि नामदेव सभा की बैठक में चर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

संत शिरोमणि नामदेव सभा फतेहाबाद की बैठक शनिवार को डीसी कॉलोनी स्थित सभा कार्यालय में जिला अध्यक्ष शर्मा चंद लाली की अध्यक्षता में हुई। बैठक में नामदेव भवन के लिए खरीदी गई जमीन की रजिस्ट्री करवाने, भवन निर्माण की रूपरेखा तैयार करने और समाज के सर्वांगीण विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया।

साथ ही शिक्षा, रोजगार, खेल गतिविधियों, युवाओं के भविष्य और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए सामूहिक प्रयास करने पर जोर दिया गया। बैठक में नामदेव भवन की जमीन की रजिस्ट्री का कार्य प्राथमिकता से पूरा करवाने पर सहमति जताई गई, ताकि इसके बाद निर्माण कार्य शुरू करवाने की दिशा में कदम बढ़ाए जा सकें। भवन निर्माण के लिए समाज के लोगों की भागीदारी, आर्थिक सहयोग और आपसी समन्वय को लेकर भी चर्चा हुई।

वक्ताओं ने कहा कि नामदेव भवन केवल एक इमारत नहीं, बल्कि समाज की एकता, पहचान और सामूहिक शक्ति का केंद्र बनेगा। यहां सामाजिक कार्यक्रमों, बैठकों और बच्चों व युवाओं के मार्गदर्शन से जुड़ी गतिविधियां आयोजित की जा सकेंगी।



फतेहाबाद। बैठक में भाग लेते संत शिरोमणि नामदेव सभा के सदस्य।

इन मुद्दों पर मंथन

जिला अध्यक्ष शर्मा चंद लाली ने कहा कि संत शिरोमणि नामदेव सभा का उद्देश्य समाज को संगठित करने के साथ शिक्षा, रोजगार, खेल और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में आगे बढ़ाना है। नामदेव भवन आने वाली पीढ़ियों के लिए समाज की महत्वपूर्ण धरोहर साबित होगा। इसके निर्माण और विकास में प्रत्येक समाजबंधु की भागीदारी जरूरी है। उन्होंने समाजबंधुओं से भवन की रजिस्ट्री एवं निर्माण कार्य में सहयोग देने और आपसी भाईचारे को मजबूत बनाने की अपील की। बैठक में पूर्व प्रधान राजेंद्र सिंह कैथ, संरक्षक कृष्ण लाल पंवार, सभा सचिव डॉ. जवाहर लाल झाकल, उपप्रधान बुध राम फौजी, विनोद कुमार बनगांव, कोषाध्यक्ष रामेश्वर सिंह वर्मा चपलामोरी, सह कोषाध्यक्ष भूप सिंह रोहिल्ला व अन्य मौजूद रहे।

एसडीएम ने पीएम श्री स्कूल का किया निरीक्षण, छात्राओं से किया संवाद

■ शिक्षण मूल्यांकन और विद्यालय की व्यवस्थाओं का लिया जायजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

टोहाना के एसडीएम आकाश शर्मा ने पीएम श्री गवर्नमेंट गल्र्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल जाखल का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों से किताबें पढ़वाकर उनकी पठन क्षमता एवं शिक्षण स्तर का मूल्यांकन किया। साथ ही विद्यार्थियों से विज्ञान एवं गणित विषयों से संबंधित सवाल-जवाब कर उनकी विषय संबंधी समझ का जायजा लिया। एसडीएम ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए यह भी जाना कि उन्हें कक्षा में पढ़ाया गया पाठ अच्छी तरह समझ में आता है या नहीं तथा पढ़ाई के दौरान उन्हें किसी प्रकार की समस्या का सामना तो नहीं करना पड़ता। उन्होंने शिक्षकों के पढ़ाने के तरीके, कक्षाओं के नियमित संचालन तथा निर्धारित समय पर शिक्षण कार्य होने की स्थिति की भी जानकारी ली। इस दौरान विद्यार्थियों ने किताबें पढक़र सुनाईं और पूछे गए सवालों के जवाब दिए।



टोहाना। पीएम श्री स्कूल का निरीक्षण करते एसडीएम।



सिरसा। रैली को लेकर जेजेपी पदाधिकारी बैठक करते हुए।

महेंद्रगढ़ रैली को लेकर जजपा नेताओं ने बनाई रणनीति, जनसंपर्क पर फोकस

सिरसा। जननायक जनता पार्टी के पदाधिकारियों ने शनिवार को सिरसा हलका व ऐलनाबाद हलका के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की बैठक ली और उन्हें आगामी 6 दिसंबर को महेंद्रगढ़ में प्रस्तावित जेजेपी रैली को लेकर दिशा निर्देश दिए। पार्टी प्रवक्ता अमर सिंह ज्याणी ने बताया कि जेजेपी के जिला अध्यक्ष अशोक वर्मा की अध्यक्षता में सिरसा हलके के पदाधिकारियों की बैठक पार्टी के जिला कार्यालय में हुई जिसमें रैली को लेकर सिरसा प्रभारी कुलजीत कुलडिया व पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के प्रधान महासचिव राधेश्याम शर्मा ने कार्यकर्ताओं को दिशा निर्देश दिए। पदाधिकारियों ने सिरसा हलके के सभी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को निर्देश दिए कि वे इस रैली को लेकर घर घर गांव, गांव तथा वार्ड स्तर पर जन जन को आमंत्रण दें। पदाधिकारियों ने कहा कि सभी कार्यकर्ता एकजुटता से संगठन की मजबूती का परिचय दें। इस रैली की कामयाबी से प्रदेश में भाजपा की ओर से पैदा की गई समस्याओं का निदान होगा।

युवा कांग्रेस ने अंकित को सौंपी मानसा के जिला कोऑर्डिनेटर की जिम्मेदारी

■ भूना के युवा नेता पंजाब चुनाव में निभाएंगे अहम भूमिका, कांग्रेस नेताओं ने दी बधाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भूना

पंजाब में आगामी चुनाव को लेकर युवा कांग्रेस ने संगठन को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण नियुक्ति की है। इसके तहत भूना के युवा कांग्रेस नेता अंकित चमारखेड़ा को मानसा जिले का कोऑर्डिनेटर नियुक्त किया गया है। इस नियुक्ति से भूना के कांग्रेस कार्यकर्ताओं और समर्थकों में खुशी की लहर है। नई जिम्मेदारी मिलने पर अंकित चमारखेड़ा ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव कुमारी सैलजा, युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रभारी मनीष शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भानु चिब, पंजाब युवा कांग्रेस के सह-प्रभारी मुकेश राय, हरियाणा युवा कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष सौमिल सांधू और महासचिव नमन केडिया का आभार जताया। उन्होंने कांग्रेस के राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर सुरेंद्र कुमार का विशेष धन्यवाद करते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन और सहयोग से उन्हें यह जिम्मेदारी मिली है। मानसा जिले में युवा कांग्रेस को मजबूत करना, युवाओं को संगठन से जोडऩा और कांग्रेस की विचारधारा को बूथ स्तर से लेकर घर-घर तक पहुंचाना उनकी प्राथमिकता रहेगी। उनकी नियुक्ति पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व चेयरमैन चंद्रभान मेहता, प्रदेश सचिव तरसेम शर्मा, जिला सचिव अंकित कंबोज, सेवानिवृत्त एसडीओ धर्मपाल शीला और मदन लाल शीला सहित अन्य कांग्रेस नेताओं ने बधाई दी।



भूना। सांसद कुमारी सैलजा का आभार जताते युवा कांग्रेस नेता अंकित चमारखेड़ा।

अपराध रोकने में भाजपा सरकार विफल: राजकुमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा



राजकुमार शर्मा

प्रदेश कांग्रेस प्रतिनिधि राजकुमार शर्मा ने हरियाणा में लगातार बिगड़ रही कानून व्यवस्था को लेकर भाजपा सरकार को कटघरे में खड़ा किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अपराध का ग्राफ लगातार बढ़ रहा है। आए दिन लूट, डकैती, छीनाझपटी और चोरी जैसी वारदातें सामने आ रही हैं, जिससे आमजन में भय और असुरक्षा का माहौल बना हुआ है। प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति चिंताजनक होती जा रही है, लेकिन सरकार इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा रही। शर्मा ने कहा कि अभी सर्दी का मौसम पूरी तरह शुरू भी नहीं हुआ है, लेकिन इससे पहले ही प्रदेशभर में चोरी और अन्य आपराधिक वारदातों में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। सर्दियों के दौरान चोरी की घटनाओं में और इजाफा होने की आशंका से लोग चिंतित हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश के शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अपनी संपत्ति और जान माल की सुरक्षा को लेकर परेशान हैं। अपराधियों के हौसले बुलंद हैं और आम नागरिक खुद को असुरक्षित महसूस कर रहा है। प्रदेश सरकार कानून व्यवस्था कायम रखने में असफल रही है।

डाइट मताना में संपन्न हुआ केबीसी 3.0 प्रशिक्षण शिविर

फतेहाबाद के 540 अध्यापकों ने सीखा उद्यमशीलता का पाठ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) मताना में आयोजित 'कुशल बिजनेस चैलेंज' (केबीसी 3.0) का विशेष प्रशिक्षण शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। इस महत्वकांक्षी प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ 15 अक्टूबर को डाइट प्राचार्य विनोद कुमार श्योराण द्वारा किया गया था।

इस कार्यक्रम के तहत फतेहाबाद जिले के सभी ब्लॉकों से कुल 540 अध्यापकों ने भाग लेकर उद्यमशीलता और व्यावहारिक कौशल का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों को भविष्य की रोजगार संबंधी चुनौतियों के लिए तैयार करना है। इसके साथ ही विद्यार्थियों में उद्यमशीलता की भावना विकसित करना और उन्हें केवल नौकरी तलाशने वाले के बजाय स्वयं रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए प्रेरित करना इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य रहा। इस मौके पर शिक्षकों ने स्कूल शिक्षा की चुनौतियों पर भी मंथन किया।



फतेहाबाद। डाइट मताना में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में भाग लेते अध्यापक। फोटो : हरिभूमि

व्यावहारिक ज्ञान की महत्ता

प्रशिक्षण शिविर का समापन वरिष्ठ प्रवक्ता शेर सिंह और आईएफआईसी विंग प्रभारी एवं वरिष्ठ प्रवक्ता राकेश मखीजा द्वारा किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन, नवाचार, व्यवसाय और बाजार की वास्तविक चुनौतियों से रूबरू कराने में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस संपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम के जिला समन्वयक के रूप में प्राध्यापक महेंद्र कुमार और प्राध्यापिका मोनिका जग्गा ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई।

कार्यक्रम में इनका सहयोग रहा

यह प्रशिक्षण शिविर उद्यम लर्निंग फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसके समन्वयक मुकेश कुमार और रेणु बाला रहे। प्रशिक्षण के दौरान मास्टर ट्रेनर्स के रूप में गुरमीत कुमार, सुनील कुमार, वकील, राम, अवधेश ओझा, बलजीत कुमारी, गिन्नी अरोड़ा और प्रवीण कुमारी ने विभिन्न गतिविधियों व व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से अध्यापकों को प्रशिक्षित किया। विशेषज्ञों का मानना है कि अध्यापकों के माध्यम से यह ज्ञान जब विद्यार्थियों तक पहुंचेगा, तो उनमें आत्मविश्वास व रचनात्मक सोच विकसित होगी।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 15 नवंबर 2026

देश में बढ़ती बुजुर्गों की आबादी

एक जरूरी पड़ताल

आज भले ही हमारे देश में युवाओं की आबादी अधिक है। लेकिन तमाम आंकड़े और अध्ययन बताते हैं कि आने वाले कुछ दशकों में युवाओं से अधिक बुजुर्गों की आबादी हो सकती है। इसकी अनेक वजहें हैं। देश के निरंतर विकास की दिशा में अग्रसर बने रहने के लिए बुजुर्ग और युवा जनसंख्या में संतुलन आवश्यक है। इसलिए इन वजहों की पड़ताल और प्रभावी कदम उठाए जाने की बहुत जरूरत है।



कवर स्टोरी
अखिलेश श्रीवास्तव चमन

किसी भी देश या समाज की असली ताकत उसके युवा होते हैं। वह युवा शक्ति ही है, जो देश के विकास को गति देती है, उसकी दशा एवं दिशा तय करती है और परिवर्तन की निमित्त बनती है। खुशी की बात है कि वर्तमान में भारत दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार भारत की चालीस प्रतिशत से अधिक आबादी पच्चीस साल से कम उम्र के युवाओं की है। पैंतीस साल से कम उम्र के युवाओं का प्रतिशत लगभग पैंसठ प्रतिशत है। देश के लिए यह गर्व और प्रसन्नता की बात है। लेकिन सामाजिक स्थितियां इंगित कर रही हैं कि इस खुशी की आयु बहुत लंबी नहीं है।

क्या कहते हैं आंकड़े

अपना देश बुढ़ापे की तरफ बहुत तेजी के साथ बढ़ रहा है। इस बात की पुष्टि विविध आंकड़ों से भी होती है। आंकड़ों के आधार पर अनुमान है कि वर्ष 2050 तक भारत बूढ़ों का देश हो जाएगा। यानी, यहां युवाओं की तुलना में बूढ़ों की संख्या अधिक हो जाएगी। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 1951 में भारत में 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या 2 करोड़ थी। वर्ष 2011 में भारत में साठ वर्ष से अधिक आयु के लोगों की आबादी 10.16 करोड़ यानी देश की कुल आबादी की लगभग 8.4 प्रतिशत थी। अगले दस वर्षों में यह आबादी बढ़ कर दोगुनी और कुल आबादी की 10.5 प्रतिशत हो गई। बताया जाता है कि वर्तमान यानी 2025 में देश में साठ वर्ष से अधिक आयु वालों की आबादी कुल आबादी की लगभग 12 प्रतिशत से कुछ अधिक है। 2030 तक देश की बुजुर्ग आबादी बढ़ कर 13.8 प्रतिशत हो जाएगी, जो देश की तत्कालीन आबादी का सातवां हिस्सा होगा। यानी देश का हर सातवां नागरिक बुजुर्ग होगा। अनुमान है कि वर्ष 2036 में देश की कुल आबादी 153 करोड़ होगी और तब तक बुजुर्गों की आबादी लगभग 23 करोड़ यानी देश की कुल आबादी की 15 प्रतिशत तक हो जाएगी। इसमें 80 साल से अधिक आयु का हिस्सा ज्यादा होगा। इसी प्रकार अनुमान है कि सन् 2050 में देश की लगभग 21 प्रतिशत आबादी सीनियर सिटिजन की होगी। सन् 2075 में भारत की कुल आबादी 1.6 अरब होने का अनुमान है, जिसमें लगभग 32 प्रतिशत हिस्सेदारी साठ साल से अधिक आयु वर्ग के लोगों की होगी। यानी पचास साल बाद 2075 में देश का हर तीसरा व्यक्ति सिनियर सिटिजन होगा।



कम हो रही युवा आबादी

वर्तमान समय में भारत की आबादी की औसत आयु 29 वर्ष बताई जाती है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार सन् 2021 में देश में पंद्रह से उनतीस वर्ष आयु के मध्य के युवाओं की कुल संख्या 37.14 करोड़ थी, जो कुल जनसंख्या की लगभग 28 प्रतिशत थी। पैंतीस साल से कम उम्र के युवाओं की भागीदारी 65 प्रतिशत से भी अधिक थी। लेकिन अब इसमें गिरावट आने लगी है। अनुमान है कि सन् 2036 में देश की आबादी में युवाओं की भागीदारी घट कर मात्र लगभग 22.7 प्रतिशत रह जाएगी। कहना न होगा कि युवा आबादी घटने से देश के जनबल और कार्यबल में कमी आएगी।

बढ़ रही है औसत आयु

पिछले दो दशकों से देश में बच्चों की आबादी बहुत तेजी के साथ घट रही है, जबकि दूसरी तरफ चिकित्सा सुविधाएं तथा जीवन स्तर में सुधार के कारण आम आदमी की जीवन प्रत्याशा (औसत आयु) लगातार बढ़ रही है। अब से लगभग सौ साल पहले यानी बीसवीं सदी के तीसरे दशक में भारत में औसत आयु 30 वर्ष थी। छठें दशक में भारत की औसत आयु बढ़कर 43.5 वर्ष हो गई थी। 1990 में यह 58 वर्ष थी और अब अपने देश की औसत आयु लगभग 72 वर्ष हो चुकी है। एक तरफ जहां आदमी की औसत आयु लगातार बढ़ रही है, वहीं दूसरी तरफ मृत्यु दर घट रही है।

जन्मदर में आ रही है कमी

आम आदमी की औसत आयु में वृद्धि तक तो बात ठीक है लेकिन नवजात की जन्म दर में कमी की प्रवृत्ति अवश्य चिंता का विषय है। यह प्रवृत्ति इस कारण भी चिंता का विषय है कि बच्चों के जन्म दर में गिरावट आकस्मिक नहीं बल्कि ऐच्छिक, सुविचारित और सुनियोजित है। कह सकते हैं कि आज की युवा पीढ़ी तात्कालिक फायदे के मूल्य पर देश-समाज के भविष्य के लिए मुश्किल पैदा कर रहे हैं। भारत में जन्म लेने वाले शिशुओं की वार्षिक संख्या वर्ष 2001 में 2.93 करोड़ थी। वर्ष 2023 में यह संख्या 2.32 करोड़ रह गई। यानी लगभग दो दशक की अवधि में नवजात शिशुओं की संख्या में 20 प्रतिशत से भी अधिक की गिरावट आ चुकी है।



देर से शादी भी है वजह

इस भावी समस्या का एक बड़ा कारण है शादियों में विलंब तथा युवा पीढ़ी का अपने दायित्वों से पलायन। अब से लगभग चार दशक पहले तक शादियां औसतन पच्चीस-छब्बीस वर्ष की आयु तक हो जाया करती थीं। लेकिन करियर के दबाव, जीवनशैली में बदलाव तथा सुरक्षित भविष्य की अनिश्चितता के कारण आज तीस-बत्तीस की उम्र शादी की सामान्य उम्र बन चुकी है। अधिकांश मामलों में तो यह उम्र पैंतीस या उससे भी ऊपर पहुंच चुकी है। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार महिलाओं की प्रजनन क्षमता 20 से 27 वर्ष की आयु के मध्य अपने चरम पर होती है। 30 वर्ष की उम्र के बाद इस क्षमता में गिरावट आने लगती है। इससे गर्भ धारण करने की संभावना बहुत कम हो जाती है। इसी प्रकार पुरुषों में भी 35 वर्ष की उम्र के बाद शुक्राणु उत्पादन में गिरावट आने लगती है। यही कारण है कि समाज में निःसंतान दंपत्तियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, जो अंततः युवा आबादी में ह्रास के रूप में सामने आ रही है। इसके अलावा आज कई युवा विवाह को बंधन मानने लगे हैं। लिव इन रिलेशन के ट्रेंड से इस प्रवृत्ति को और अधिक बढ़ावा मिल रहा है। ऐसे कपल्स बच्चे पैदा करने और उसका पालन-पोषण करने की जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं होते हैं। विशेष रूप से जहां पति और पत्नी दोनों नौकरी में हैं, वहां बच्चा पैदा करना एक अवांछित बोझ माना जाने लगा है। संयुक्त परिवारों के विघटन ने इस सोच को और अधिक बल दिया है।

वजहें कोई भी हों, देश की घटती युवा शक्ति भविष्य के लिए खतरे की घंटी है। अभी समय है कि युवाओं की घटती संख्या को गंभीरता से लिया जाए और आने वाले संभावित संकट यानी देश को बूढ़ों का देश होने से बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं। *

बुजुर्गों के बढ़ने की ये भी हैं अन्य वजहें

युवाओं की आबादी घटने के पीछे कुछ और कारण भी जिम्मेदार हैं। अध्ययन बताते हैं कि आत्महत्या तथा मार्ग दुर्घटनाएं भी युवा वर्ग की मृत्यु के कारण बन रहे हैं। पारिवारिक जिम्मेदारी, मानसिक तनाव, असुरक्षित भविष्य, नशे की लत तथा नौकरी और पढ़ाई का दबाव कई ऐसे कारण हैं, जो युवा वर्ग को आत्महत्या की तरफ ढकेल रहे हैं।

इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च में प्रकाशित एम्स के एक अध्ययन के अनुसार मई 2023 से अप्रैल 2024 की अवधि में घर के अंदर, ऑफिस में या यात्रा के दौरान अचानक मरने वालों में 57.2 प्रतिशत युवा थे, जिनकी औसत आयु 33.6 वर्ष थी। खास बात यह कि ऐसे मरने वालों में भी पुरुषों की संख्या महिलाओं से लगभग दो गुनी थी। किशोर वय के छात्रों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बहुत तेजी से बढ़ रही है। सर्वेक्षण बताते हैं कि छात्रों की आत्महत्या की दर पिछले बारह वर्षों में 65 प्रतिशत बढ़ी है।

आत्महत्या के बाद युवा मृत्यु का दूसरा बड़ा कारण है वाहन दुर्घटना। दुर्घटनाओं के कारण होने वाली मृत्यु की सहभागिता कुल युवा मृत्यु का 16.4 प्रतिशत है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में प्रति वर्ष लगभग पांच लाख मार्ग दुर्घटनाएं होती हैं, जिनमें प्रतिवर्ष औसतन दो लाख लोगों की मौत होती है। इसमें खास बात यह है कि इन दुर्घटनाओं में मरने वालों में लगभग 85 प्रतिशत युवा होते हैं। इसके अतिरिक्त कुपोषण, बाल श्रम, बाल तस्करी, बेरोजगारी, कुंठा, नशाखोरी तथा अपराध आदि भी युवाओं की संख्या में गिरावट के कारण बन रहे हैं। देश में युवाओं की घटती आबादी के पीछे एक बड़ा कारण परिवार नियोजन की नीति भी है। 15 फरवरी 2000 को घोषित भारत की जनसंख्या नीति का उद्देश्य सन् 1945 तक देश की जनसंख्या दर को स्थिर करना है। चिंता की बात यह कि देश के 14 राज्यों में प्रजनन दर राष्ट्रीय औसत से काफी कम हो गई है। पड़ोसी देश चीन इस क्षेत्र में सख्ती का दुष्परिणाम भुगत चुका है। इसलिए हमें सजग रहना जरूरी है।

लाइब्रेरी से किताबें अपने घर लाने की बात हो या वहीं सुकून से बैठकर अपनी पसंदीदा पुस्तक पढ़ने की, लाइब्रेरी शब्दों से रिश्ता जोड़ने की प्यारी जगह है। अब तो डिजिटल फॉर्म में भी यह खूब लुभा रही है। नेशनल लाइब्रेरी वीक (14-20 नवंबर) के अवसर पर लाइब्रेरी की उपयोगिता पर एक नजर।

कायम है किताबों से जुड़ाव



लाइफस्टाइल
डॉ. मोनिका शर्मा

नवीन जीवन में पुस्तकें पढ़ने की उपयोगिता हमेशा से रही है। शब्दों से जुड़ाव के इस माध्यम की भूमिका हर दौर में अहम रही है। यूं भी बेहतरी की ओर बढ़ते रहने के लिए किताबों के पन्ने पलटने का चाव, उम्र के हर पड़ाव में रहना ही चाहिए। ऐसे में पुस्तकालय यानी पुस्तकों के आलय का महत्व भी सदा ही रहेगा।

लाइब्रेरी की महत्ता: लाइब्रेरी का अंग्रेजी शब्द लाइब्रेरी का ही हिंदी रूपांतर है। यह शब्द लैटिन भाषा के 'लाइवर' शब्द से बना है, जिसका अर्थ पुस्तक होता है। स्पष्ट है कि कहीं न कहीं यह पुस्तकों से जुड़ाव बनाने वाली मुहिम है। जिसके तहत अध्ययन, पठन, रिसर्च और ज्ञान के प्रसार के लिए कई तरह की पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, डॉक्यूमेंट्स और संसाधनों को व्यवस्थित तरीके से संग्रहित किया जाता है। कई महंगी किताबें, लिमिटेड एडिशन वाली पुस्तकें, रिसर्च पेपर्स आदि बिना खर्चा किए यहां पढ़े जा सकते हैं। किफायत, सहूलियत और आमजन में अवेयरनेस लाने वाले स्थलों के रूप में पुस्तकालयों की अहमियत आज भी कायम है। पुस्तकालय, सिर्फ एक इमारत भर नहीं होते। यह शिक्षित और जागरूक समाज बनाने का सपना साधने की भी जगह होती है। यहां का परिवेश जन-जागरूकता का केंद्र होता है।



यह सप्ताह मनाने का उद्देश्य: रीडिंग हैबिट्स बढ़ाने के साथ ही लोगों को बुक्स का महत्व समझाने के लिए हमारे देश में भारतीय पुस्तकालय संघ द्वारा 1968 से हर वर्ष 14 से 20 नवंबर तक राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह मनाया जाता है। असल में नेशनल लाइब्रेरी वीक में आयोजित होने वाली बहुत-सी एक्टिविटीज लोगों को किताबों से जोड़ने का काम करती हैं। इस अवसर पर स्कूल, कॉलेज और पब्लिक लाइब्रेरीज में पुस्तक प्रदर्शनियां, क्विज, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं और स्टोरी टेलिंग-रीडिंग से जुड़े कई कार्यक्रम होते हैं।

जुड़ाव की जगह: लाइब्रेरी सिर्फ किताबें पढ़ने की जगह नहीं होती। किताबों का यह घर बहुत से लोगों को अपनेपन, वैचारिक संवाद और आपसी जुड़ाव का भी अवसर देता है। यहां नियमित आने वाले लोग अच्छे मित्र बन जाते हैं। ज्ञान-विज्ञान के विषयों पर अच्छी चर्चा होती है। खासकर पब्लिक लाइब्रेरीज में तो समाज के हर वर्ग के लोगों को बिना किसी भेदभाव के फ्री पुस्तकें मिलती हैं। इतना ही नहीं शिक्षण संस्थानों की एकेडेमिक लाइब्रेरीज में भी स्टूडेंट्स में अच्छा आपसी जुड़ाव बनता है। स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटीज में विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए बनाई गई लाइब्रेरीज नए विचारों और आइडियाज को समझने का कोना होते हैं। इतना ही नहीं पुस्तकालयों को पीढ़ियों का सेतु भी कहा जाता है। यहां पर बच्चों, युवाओं और वरिष्ठजनों में साझा संवाद होता है। एक ही छत के नीचे बैठकर हर आयुवर्ग के लोग पुस्तकें पढ़ते हैं, तो विचार साझा करने का मार्ग भी निकलता है। ऐसे में पुस्तकालय बुजुर्गों को सोशल आइसोलेशन से भी बचाते हैं।

होते हैं अनेक लाभ: यहां विद्यार्थी किसी एक ही विषय पर अलग-अलग दृष्टिकोण से लिखी कई पुस्तकें पढ़कर भी समृद्ध होते हैं और अलग-अलग विषयों की बहुत सारी किताबें पढ़कर भी समान रुचि वाले स्टूडेंट्स मिलकर कुछ नया रचने-गुनने की साझी राह पकड़ते हैं। यूके में हुई एक स्टडी के मुताबिक शांत और सुरक्षित माहौल में नियमित रूप से पढ़ना और सार्वजनिक स्थानों पर दूसरों के साथ उपस्थिति महसूस करना तनाव, चिंता और अकेलेपन के जोखिम को कम करता है। देखने में आता है कि बहुत से लोग लाइब्रेरीज में मेंटल हेल्थ, स्ट्रेस मैनेजमेंट और सकारात्मक जीवनशैली पर लिखी गई किताबें भी पढ़ते हैं। मानसिक तनाव कम करने और जीवन को नया दृष्टिकोण देने वाली ऐसी पुस्तकें आमतौर पर अकादमिक पुस्तकों की तरह खरीदकर कम ही पढ़ी जाती हैं। ज्ञान के प्रसार का जीवंत केंद्र माने जाने वाले पुस्तकालयों में बैठकर इन्हें पढ़ने वाले इनसे खूब लाभान्वित होते हैं। अपने जीवन की सार्थक दिशा तलाशने का प्रयास करते हैं।

तकनीक ने बदला रूप: हालिया वर्षों में डिजिटल लाइब्रेरी के माध्यम से भी लोग किताबों तक पहुंचने लगे हैं। पुस्तकों का यह ऑनलाइन प्लेटफॉर्म भी हर आयुवर्ग में तेजी से पॉपुलर हो रहा है। असल में डिजिटल लाइब्रेरी एक ऐसा डेटाबेस है, जहां पुस्तकें, थीसिस, विभिन्न विषयों से जुड़ी ऑडियो, वीडियो एवं दूसरी शैक्षिक सामग्री डिजिटल रूप में संग्रहित की जाने लगी है। इंटरनेट की मदद से इस इलेक्ट्रॉनिक कंटेंट को कंप्यूटर, टैबलेट या स्मार्टफोन के माध्यम से कहीं से भी एक्सेस किया जा सकता है। हमारे यहां नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी और राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय खूब चर्चित हो रहे हैं। सबसे अहम यह है कि यह सब सामग्री हर समय आपके पास होती है। नई पीढ़ी के बच्चों को डिजिटल दुनिया के पुस्तकालय खूब लुभा रहे हैं। वास्तविक हो या वर्चुअल, किताबों से जोड़ने वाले ये ठिकाने आज भी अपनी अहमियत बनाए हुए हैं। *

लघुकथा / संजीव ठाकुर

फैशन

ड्राइवर हमारे घर आते-आते भीग गया था। उसने अपने घर से फोन किया था कि बारिश हो रही है, वह थोड़ी देर से आएगा। मैंने कहा था, 'कोई बात नहीं, लेकिन आना जरूर। हम तैयार बैठे हैं, जाना जरूरी है।' मैंने उसे एक अतिरिक्त ड्रेस भी साथ रख लेने की सलाह भी दी थी। वह खाली हाथ आया था! अतिरिक्त ड्रेस साथ रखना उसे अपनी शान के खिलाफ लगा होगा। उसकी गीली कमीज को देखकर मैंने पूछा, 'इसी तरह जाओगे? मैंने तो तुम्हें कहा था!' 'चला जाऊंगा। रास्ते में सूख जाएगी!' उसने जवाब दिया। अचानक मेरे मन में आया कि मेरे पास जो टी-शर्ट रखी है, किसी की दी हुई, जिसका रंग मुझे पसंद नहीं है, किसी को देनी ही है, इसी को दे देता हूं!

मैं उसे गेट पर रुकने को बोलकर कमरे के अंदर चला गया, टी-शर्ट निकाल लाया। मैंने कहा, 'इसे पहन लो, नई है।' उसने अपनी गीली कमीज उतार कर टी-शर्ट पहन ली लेकिन पहनते ही बोला, 'ढीली है!' मैंने कहा, 'ढीली ही है न, गीली तो नहीं? ये देखो, मैंने भी ढीली कमीज ही पहन रखी है।'

मुझे लगा कि उसे ढीली की जगह अपनी गीली



कमीज पहनने का ही मन था लेकिन फिर भी वह ढीली पहनकर ही गाड़ी में बैठ गया।

करीब एक सौ बीस किलोमीटर की यात्रा कर हमें अपनी बेटी के इंस्टीट्यूट में जाना था। बीच रास्ते में हम चाय के लिए रुके। चाय पीते हुए हम पति-पत्नी ने गौर किया कि टी-शर्ट उस पर ठीक ही लग रही है। लेकिन उसके मन में क्या चल रहा है, यह हम नहीं समझ पाए। यह हम तब समझ पाए, जब बेटी के इंस्टीट्यूट पहुंचे और गाड़ी रोकते ही उसने त्वरित गति से पॉलीथीन से अपनी आधी गीली कमीज निकालकर पहन ली और टी-शर्ट उसी पॉलीथीन में पैक कर दी! *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

पत्नी केंद्रित कहानियां

वरिष्ठ कथाकार नवनीत मिश्र की पत्नी केंद्रित ग्यारह कहानियों का संग्रह 'बेटर हाफ' कुछ समय पूर्व प्रकाशित हुआ है। ये कहानियां पत्नी के नजरिए से दांपत्य जीवन के अंतरे-कोने में झांकती हैं। ये कहानियां सवाल उठाती हैं कि अर्धांगिनी के रूप में आने के बाद भी स्त्री के प्रति पुरुष की मानसिकता प्रायः क्यों अपने पुरुषत्व से मुक्त नहीं हो पाती है? इस लिहाज से 'बेटर हाफ' और 'मकड़ा' कहानी को विशेष तौर पर पढ़ा जा सकता है। 'व्यक्तिगत डायरीः कृपया इसे न पढ़ें' स्त्रीत्व की अनुभूति की मार्मिक कथा है। 'रिश्ते' कहानी में पुरुष से स्वयं अलग होने

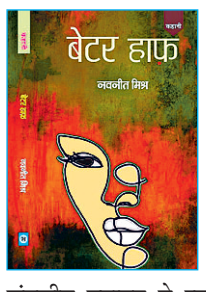

का निर्णय लेने वाली एक स्त्री के द्वारा उठाया गया सवाल, झकझोर देता है। संग्रह की लगभग हर कहानी में अलग-अलग नजरिए से बिना शोर मचाए स्त्री विमर्श अभिव्यक्त हुआ है। भाषा की रवानगी और शिल्प की चुंबकीय बुनावट ने इन कहानियों में गजब की पठनीयता उत्पन्न कर दी है। *

पुस्तकः बेटर हाफ (कहानी संग्रह),
लेखकः नवनीत मिश्र, **मूल्यः** 450 रुपए,
प्रकाशकः भावना प्रकाशन, दिल्ली

व्यंग्य
भूपेंद्र भारतीय

क्षेत्र की खुशी के लिए नेताजी कभी-कभी तो पैदल भी चलते हैं। पैदल चलते हुए गरीबों की बस्ती में जाना, किसी गांव में सड़क के अभाव में, कीचड़ के दबाव में, किसी खेत पर कोई किसान काम कर रहा है तो किसान के पास पैदल चलकर जाना, ऐसे कितने ही अवसर दिन भर में आते हैं, जब नेताजी पैदल चलकर भी अपने क्षेत्र की खुशी की कामना के लिए पैदल चलते रहते हैं।

क्षेत्र की खुशी के लिए!

पिछले दिनों नेताजी अपने क्षेत्र की खुशी की कामना करते हुए पवित्र नदी में डुबकी लगाने गए थे। क्षेत्र की खुशहाली के लिए अच्छे से डुबकी लगाई व खुद के मन की शांति के लिए स्नान भी किया। अपना नहीं, दूसरों का भला हो, ऐसा सोचने वाले अब कम ही लोग मिलते हैं। वह भी राजनीति के क्षेत्र में! लेकिन हमारे नेताजी क्षेत्र के बारे में बहुत सोचते हैं। उनकी राजनीति, उनके क्षेत्र की खुशी में ही चल रही है। अपने क्षेत्र को खुश देखना उनकी राजनीतिक यात्रा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। वे क्षेत्र की खुशी में ही स्वयं की खुशी मानते हैं!

अपने क्षेत्र की खुशी के लिए दिन-रात क्षेत्र का दौरा करते रहते हैं। दो तीन कारें उनके दौरे के लिए दौड़ती ही रहती हैं। क्षेत्र के विकास के लिए आई राशि से क्षेत्र का विकास भले ना हो लेकिन नेताजी उस राशि से स्वयं तीर्थ करके क्षेत्र की खुशी की कामना करना नहीं भूलते हैं। कैसे भी हो क्षेत्र की जनता खुश रहनी चाहिए। इसीलिए क्षेत्र की खुशी की कामना में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। कहीं किसी उपदेशक ने कोई कथा सुनानी शुरू की नहीं कि नेताजी उसके चरणों में क्षेत्र की खुशी के लिए दंडवत हो जाते। दंडवत होते हुए नेताजी के चेले उनका फोटो सोशल मीडिया पर झट से पोस्ट कर देते हैं। सोशल मीडिया पर भी क्षेत्र की जनता खुश हो जाती है। कामना हर ओर से चलती रहती है। कामना में कोई कमी नहीं रहने देते हैं।



क्षेत्र की खुशी के लिए नेताजी कभी-कभी तो पैदल भी चलते हैं। पैदल चलते हुए गरीबों की बस्ती में जाना, किसी गांव में सड़क के अभाव में, कीचड़ के दबाव में, किसी खेत पर कोई किसान काम कर रहा है, तो किसान के पास पैदल चलकर जाना, क्षेत्र में कार से घूमते हुए कोई मतदाता दिख गया तो उस मतदाता तक कार से उतरकर पैदल जाना इत्यादि ऐसे कितने ही अवसर दिन भर में आते हैं, जब नेताजी पैदल चलकर भी अपने क्षेत्र की खुशी की कामना के लिए पैदल चलते रहते हैं।

ऐसा नहीं है कि वे क्षेत्र की खुशी की कामना में सिर्फ पैदल ही चलते हैं बल्कि क्षेत्र की खुशी के लिए भूमि पूजन, उद्घाटन, दीप प्रज्ज्वलित करना, जनता को संबोधित करना, नए कार्यों का शुभारंभ करना, गरीब की झोपड़ी में जाकर भोजन करना इत्यादि कार्य उन्होंने प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल कर रखा है। कैसे भी करके क्षेत्र के लोगों को खुश होना चाहिए। क्षेत्र की खुशी की कामना में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। यदि क्षेत्र की खुशी की कामना में नेताजी के अकेले की दौड़भाग में कोई कमी पड़ने लगती है तो वे अपने घर व परिवार वालों को भी इसमें लगा देते हैं। कभी-कभी तो रिश्तेदारों तक को क्षेत्र की खुशहाली के लिए लगाना पड़ता है। इसमें कोई मुश्किल नहीं होती क्योंकि उनके दूर दूर के रिश्तेदार भी नेतागीरी में ही सक्रिय हैं।

क्षेत्र की जनता को व्यापार करने में परेशानी होती है तो नेताजी अपने घर में से पत्नी, पुत्र-पुत्री, भाई, भतीजे आदि को क्षेत्र की जनता के बीच रहकर व्यापार करने के लिए भी भेज देते हैं। अकसर ऐसे व्यापार में बड़ी चुनौतियां व झंझट होते हैं, इसलिए वे अपने परिवार तक को इसमें झोंक देते हैं। जनता को किसी संकट में नहीं डालते हैं। ऐसे व्यापार में शराब ठेके का लाइसेंस हो, रेत खनन, निजी स्कूल चलाना, सड़कें बनाना हो, सरकारी भूमि की तलाश करना इत्यादि जैसी गंभीर व्यापारिक चुनौतियों में भी बगैर झिझक के नेताजी स्वयं व अपने परिवार, नातेदारों को झोंक देते हैं।

जनता की खुशी में ही उनकी खुशी रहती है। किसी के मरने पर या फिर क्रियाकर्म में भी पहुंचकर नेताजी क्षेत्र की खुशी ही देखते हैं। वैसे वे मृत्युभोज के खिलाफ हैं, लेकिन उस आयोजन में जाते जरूर हैं, क्षेत्र की जनता की खुशी के लिए। और सोशल मीडिया पर स्वयं की छवि के प्रबंधन के लिए भी।

विवाह के आशीर्वाद समारोह में पहुंचकर क्षेत्र की खुशी के लिए आशीर्वाद लुटाते हैं। जब भी किसी आयोजन में होते हैं, अपने भाषणों में सबसे पहले क्षेत्र की खुशी की कामना से ही भाषण को दिशा देते हैं। विधानसभा व संसद की कार्यवाही में भाग लेने से ज्यादा उन्हें सड़कों पर धरना या आंदोलनों में क्षेत्र की खुशी दिखती हैं। उन्हें हर कदम पर क्षेत्र की खुशी की कामना ही दिखती है। विश्वविद्यालय की समितियों में अपने लोगों को फिट करना हो या फिर मंत्रालयों में अपने कार्यकर्ताओं को बैठाना हो, नेताजी ऐसे मामलों में भी क्षेत्र की खुशी की कामना का अवसर निकाल ही लेते हैं। ग्राम पंचायत के चुनाव से लेकर संसद की बहसों तक वे क्षेत्र की खुशी की तलाश में ही रहते हैं। सरकारी विदेश यात्राओं में भी वे पूरी तरह से क्षेत्र की खुशी का ध्यान रखते हैं। सच, जिस क्षेत्र में ऐसे नेता मौजूद हों तो वहां के लोगों को खुशी के मारे पागल होने से कोई नहीं बचा सकता। *

आज से शुरू हो रहे नवंबर के दूसरे पखवाड़े में देश के अलग-अलग हिस्सों में बदलते मौसम के रंगों के साथ सांस्कृतिक छटा बिखेरते कई उत्सवों का आयोजन होगा। इनमें कहीं पहाड़ों पर चेरी के गुलाबी फूलों की मुस्कान दिखेगी, कहीं जनजातीय समुदाय नई फसल की खुशियां मनाते नजर आएंगे। ऐसे ही कुछ मनमोहक रंग-बिरंगे उत्सवों पर एक नजर।

पर्व-परंपरा
शिखर चंद जैन

संस्कृति के संग-मौसम के रंग
मनमोहक उत्सवों की छटा



राष्ट्रपति ट्रॉफी नौका दौड़ केरल

केरल की अष्टमुडी झील में आयोजित होने वाली यह नौका दौड़ पानी पर सामूहिक शक्ति, गति और तालमेल का अद्भुत प्रदर्शन है। लंबी, पतली और सांप जैसी दिखाई देने वाली पारंपरिक नौकाओं में दर्जनों नाविक एक साथ चप्पू चलाते हैं। उनके सामूहिक गीत और चप्पुओं की एक साथ पड़ती चोट दर्शकों में रोमांच भर देती है। वर्ष 2011 में शुरू हुई इस प्रतियोगिता को राष्ट्रपति ट्रॉफी का नाम तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल की उपस्थिति के बाद मिला। यह केरल की प्राचीन नौका संस्कृति को आधुनिक खेल और पर्यटन से जोड़ने वाला आयोजन है। इस वर्ष 21 नवंबर को कोल्लम की अष्टमुडी झील में इसका आयोजन निर्धारित है। *

चेरी ब्लॉसम महोत्सव मेघालय



मेघालय राज्य की राजधानी शिलांग की पहाड़ियों पर जब हिमालयी जंगली चेरी के पेड़ों पर गुलाबी और सफेद फूल खिलते हैं, तब ऐसा लगता है जैसे प्रकृति ने धरती पर गुलाबी कालीन बिछा दी हो। इसी प्राकृतिक खूबसूरती को उत्सव का रूप देने के लिए मेघालय में चेरी ब्लॉसम महोत्सव आयोजित किया जाता है। इस बार इसका आयोजन 20-21 नवंबर को होगा। वर्ष 2016 में शुरू हुए इस महोत्सव ने प्रकृति के सौंदर्य को सांस्कृतिक आयोजन का रूप दिया है। समय के साथ इसमें संगीत, स्थानीय खान-पान, कला, हस्तशिल्प, फैशन और मनोरंजन की अनेक गतिविधियां जुड़ गई हैं। आज यह मेघालय के प्रमुख पर्यटन आयोजनों में गिना जाता है। *

संगाई महोत्सव मणिपुर



मणिपुर का संगाई महोत्सव राज्य की प्राकृतिक विरासत और सांस्कृतिक पहचान का उत्सव है। इसका नाम दुर्लभ संगाई हिरण पर रखा गया है, जिसे नृत्य करता हिरण भी कहा जाता है। वर्ष 2010 में शुरू हुए इस महोत्सव का उद्देश्य मणिपुर की संस्कृति, पर्यटन, हस्तशिल्प और स्थानीय खान-पान को पहचान दिलाना है। दस दिनों तक चलने वाले इस आयोजन में पारंपरिक युद्धकला थांग-ता, रासलीला, लोकनृत्य और संगीत के साथ युबी लाकपी तथा सगोल कांगजेई जैसे पारंपरिक खेल भी देखने को मिलते हैं। इस वर्ष यह रंगारंग उत्सव 21-30 नवंबर को आयोजित होगा। *

माजुली रास महोत्सव असम



ब्रह्मपुत्र नदी के बीच बसे माजुली द्वीप में रास महोत्सव भक्ति और अभिनय का अनूठा संगम है। यहां भगवान श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर उनकी बाल लीलाओं और राधा-गोपियों के साथ रासलीला तक की कथाओं को नृत्य, नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से जीवंत किया जाता है। इस परंपरा की जड़ें 15वीं-16वीं शताब्दी के वैष्णव भक्ति आंदोलन में हैं। संत श्रीमंत शंकरदेव की विकसित की गई अंकिया नाट और सत्र परंपरा ने रासलीला को विशिष्ट पहचान दी। माजुली के सत्रों में कलाकार पारंपरिक मुखौटों, वेशभूषा और संगीत के सहारे कृष्ण कथाओं का मंचन करते हैं। रात भर चलने वाली ये प्रस्तुतियां आकर्षक होती हैं। इस बार 24-26 नवंबर को इसका आयोजन होगा। *

कूचबिहार रास मेला पश्चिम बंगाल



उत्तर बंगाल का कूचबिहार रास मेला, धार्मिक आस्था और राजसी इतिहास का सुंदर मेल है। इसका केंद्र भगवान मदनमोहन का मंदिर है। इस मेले की परंपरा कोच राजवंश के महाराजा हरेंद्र नारायण के शासन काल से जुड़ी मानी जाती है। सबसे पहले यह वेतागुड़ी में आयोजित होता था। बाद में मदनमोहन मंदिर और फिर 1912 में वर्तमान रास मेला मैदान में स्थानांतरित हुआ। यहां का विशाल रासचक्र मेले की खास पहचान है। श्रद्धालु इसकी पूजा करते हैं और इसे घुमाने की परंपरा में भाग लेते हैं। खिलौनों, मिठाइयों, घरेलू सामान और स्थानीय हस्तशिल्प की दुकानें मेले को विशाल लोकउत्सव में बदल देती हैं। इस वर्ष कार्तिक पूर्णिमा यानी 24 नवंबर से इसका शुभारंभ होगा। *

नगादा महोत्सव नागालैंड



नागालैंड की रेंगमा जनजाति का नगादा महोत्सव फसल कटाई के बाद मनाया जाने वाला प्रमुख पारंपरिक पर्व है। यह प्रकृति के प्रति आभार, पूर्वजों के प्रति सम्मान और सामाजिक एकता का प्रतीक माना जाता है। खेती का काम पूरा होने और अनाज घर पहुंचने के बाद पूरा समुदाय उत्सव में शामिल होता है। लोग पारंपरिक वेशभूषा पहनते हैं, लोकगीत गाते हैं, सामूहिक नृत्य करते हैं और भोज का आनंद लेते हैं। इस उत्सव की एक खूबसूरत सामाजिक परंपरा आपसी मनमुटाव भुलाकर नए सिरे से संबंधों को मजबूत करना भी है। यह केवल फसल की खुशी नहीं, बल्कि सामुदायिक जीवन और भाईचारे का उत्सव है। इस वर्ष 27-28 नवंबर को त्सेमिन्यू में इसका आयोजन होगा। *

ऐसे बन सकते हैं अपनी कंपनी के इंपॉर्टेंट-वैल्यूएबल एंप्लॉई

जिस तरह हर एंप्लॉई चाहता है कि कंपनी उसका ध्यान रखे, उसी तरह कंपनी भी आपसे बेहतर परफॉर्मेंस की उम्मीद करती है। कंपनी मैनजमेंट की नजर में इंपॉर्टेंट एंप्लॉई बनने के लिए किस तरह के प्रयास जरूरी हैं, आप जरूर जानना चाहेंगे।

सेल्फ इंप्रूवमेंट
कीर्तिशेखर



एक प्राइवेट संस्थान से मास कम्युनिकेशन में एक साल का डिप्लोमा करने के बाद प्रिया ने कई छोटे-बड़े संस्थानों में जॉब के लिए अप्लाई किया। बड़े संस्थानों में कार्यानुभव न होने के कारण उसे नौकरी मिलने में मुश्किल आ रही थी। अंततः उसने एक छोटे से मीडिया हाउस में ही बतौर असिस्टेंट ज्वॉइन कर लिया। मास कम्युनिकेशन में डिप्लोमा होने के बावजूद लेखन में रुचि न होने के कारण उसे पहले थोड़ी दिक्कत हुई। लेकिन प्रिया ने धीरे-धीरे लेखन के क्षेत्र में ध्यान देना शुरू किया। दो साल तक कड़ी मेहनत के बाद उसने अपने आपको इस लायक बना लिया कि अब उसे किसी भी बड़े संस्थान में आसानी से नौकरी मिल सकती थी। जिस संस्थान में वह कार्य कर रही थी, उसी में ही धीरे-धीरे उसकी पदोन्नति होती गई और अपनी मेहनत, कर्मठता और कार्य के प्रति समर्पण ने उसे एक स्किल्ड और इंपॉर्टेंट एंप्लॉई बना दिया। उसकी कंपनी अब नहीं चाहती थी कि वह किसी भी हाल में यहां से छोड़कर जाए।



बदलें अपना दृष्टिकोण: अगर आप किसी संस्थान में नौकरी की शुरुआत करते हैं और कुछ अर्से के बाद आपके मन में यह बात आना स्वाभाविक है कि आप लगातार अपनी कंपनी के लिए मेहनत करते हैं। आप और आपके जैसे अन्य एंप्लॉइज के बूते पर ही यह कंपनी टिकी है। लेकिन कंपनी आपके बारे में क्या सोचती है? आपको लग सकता है कि कंपनी के लिए आप जो मेहनत करते हैं, उसके एवज में जो आपको वेतन मिलता है, वह वेतन अन्य कंपनियों की तुलना में कम है। सवाल है कि ऐसा सवाल क्यों उठता है? दरअसल, इसकी बड़ी वजह है कि हम स्वयं को सिर्फ एक एंप्लॉई के स्थान पर ही रखकर सोचते हैं। अगर हम खुद को मैनेजमेंट की जगह पर रखकर गंभीरता से सोचें, तो हमें इस प्रश्न का उत्तर आसानी से मिल सकता है।

जरूर रंग लाती है मेहनत: यह सही है कि किसी भी कंपनी की रीढ़ उसके एंप्लॉइज होते हैं। किसी भी संस्थान को बनाने, उसे उन्नति की ओर ले जाने और उस संस्थान को छोटे से बड़े संस्थान में परिवर्तित करने में उस संस्थान में काम करने वाले एंप्लॉइज की मेहनत, ईमानदारी, उनकी स्किल और निष्ठा ही सबसे बड़ा आधार होती है, जिसके बलबूते पर वह संस्थान उन्नति करता है। किसी भी संस्थान में यूं तो अनेक एंप्लॉइज काम करते हैं लेकिन जो अपनी सोच, अपने काम करने के तरीके और उसके परिणाम से कंपनी के नतीजों को प्रभावित करता है, वह भले ही थोड़े समय तक कंपनी की नजर में न आए लेकिन मैनेजमेंट देर-सवेर उसकी योग्यता और कार्यक्षमता को जान ही जाता है। एक बार ऐसा हो जाने पर कंपनी का रवैया उसके प्रति पूरी तरह सकारात्मक हो जाता है। ऐसे में कपनी को भी उससे अपेक्षाएं बढ़ने लगती हैं। जब आपकी कंपनी आपसे अपेक्षा करे तो समझ जाएं कि आप उस कंपनी के लिए एक एसेट जैसे बन गए हैं। इसलिए आप जहां भी हैं, अपनी योग्यता, ईमानदारी, कर्मठता और कार्य के प्रति समर्पण के बल पर अपनी पहचान बना सकते हैं। यकीन मानिए आपका यह प्रयास कभी बेकार नहीं जाएगा।

रेग्युलर करें बेहतर परफॉर्म: किसी भी कंपनी में कार्यरत कर्मचारी अगर एकबारगी अपनी बेहतर कार्यक्षमता का परिचय दे तो मैनेजमेंट उसे लंबे समय तक इग्नोर नहीं करता। लेकिन कंपनी में आपकी परफॉर्मेंस में निरंतरता भी बेहद जरूरी है। वर्कप्लेस पर आपको हर दिन, हर समय अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होता है। कार्य के प्रति लापरवाही, आलस या काम को टालने या फिर नजरअंदाज करने का नुकसान कंपनी को तो होता ही है, आपको भी आने वाले दिनों में इसका खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। आपकी इंपॉर्टेंस को कम कर सकती है।

करें सेल्फ एसेसमेंट: कई एंप्लॉइज की शिकायत होती है कि वे तो बहुत अच्छा परफॉर्म कर रहे हैं, लेकिन मैनेजमेंट ही उन्हें नजरअंदाज करता है। हकीकत में ऐसा नहीं होता है। इसके लिए सेल्फ एसेसमेंट जरूरी है। साल में एक या दो बार अपने पूरे परफॉर्मेंस का मूल्यांकन तटस्थ होकर स्वयं करें। इससे आपको अपनी कमियों को जानने का मौका मिलेगा। सेल्फ एसेसमेंट करने के दौरान अपनी कमियों की सूची बनाएं और धीरे-धीरे उन्हें दूर करने का प्रयास करें। इससे आप खुद के प्रति मुगालते पालने की प्रवृत्ति से बचे रहेंगे और लगातार कुशलता व परिपक्वता से अपने करियर की राह में निरंतर आगे की ओर ही बढ़ेंगे। *

नदी गाथा
वीना गौतम

घाघरा ही अवध में बन जाती है सरयू



उत्तर भारत की सदाबहार नदियों में घाघरा सबसे अनोखी नदी है। यह जब तिब्बत के पठार से निकलती है और नेपाल में प्रवेश करती है, तब इसका नाम कर्णाली होता है। जब यह उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है तो घाघरा के नाम से जानी जाती है, लेकिन अवध क्षेत्र में घुसते ही इसका नाम सरयू हो जाता है और सरयू के रूप में यह श्रद्धा और आस्था का प्रतीक बन जाती है। लेकिन इसके पहले तक यह प्रचुर प्रवाह के साथ बहने वाली सबसे विशाल नदियों में से एक होती है। नेपाल के पहाड़ों से होकर बहने के कारण मानसून के दौरान इसका जलस्तर न सिर्फ तेजी से बढ़ता है बल्कि इसका प्रवाह बहुत खतरनाक होता है।

नेपाल से उद्गम: नेपाल से उद्गम के बाद अपनी कई सहायक नदियों का जल लेकर यह भारत में उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में प्रवेश करती है और उसके बाद सीतापुर, गोंडा, अयोध्या, बस्ती मंडल के क्षेत्र से होते हुए गोरखपुर के आस-पास का इलाका कवर करते हुए बलिया जिले के बाद यह बिहार में प्रवेश कर जाती है और बिहार के छपरा के निकट गंगा नदी में मिल जाती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के अनेक जिलों में घाघरा, बाढ़ के संकट के रूप में जानी जाती है।

प्रचुर जलप्रवाह: 1000 से 1100 किलोमीटर लंबी घाघरा नदी गंगा की सबसे अधिक जलराशि लाने वाली सहायक नदी है। इसका औसत वार्षिक प्रवाह 2990 से 3280 घन मीटर प्रति सेकेंड होता है, जो मानसून में कई गुना ज्यादा हो जाता है। यह नदी इस वजह से खतरनाक है, क्योंकि इसका जलग्रहण क्षेत्र लगभग 1,27,950 वर्ग किलोमीटर का है, जिसका 55 फीसदी हिस्सा नेपाल में और 45 फीसदी भारत में स्थित है। घाघरा नदी का बेसिन तिब्बत, नेपाल, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और बिहार तक फैला है। इसकी सहायक नदियों में शामिल हैं- राप्ती, शारदा, सेती, भेरी और छोटी गंडक। अत्यधिक जल प्रवाह के कारण यह नेपाल और भारत दोनों देशों की जल व्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण नदी है।

खेती-पर्यावरण के लिए उपयोगी: इसे अवध और पूर्वी उत्तर प्रदेश की जीवनरेखा कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसी घाघरा नदी के कारण ही न सिर्फ इसमें दुर्लभ डॉल्फिन जल प्रजातियों का निवास है बल्कि गंगा में डॉल्फिन होने की वजह भी घाघरा है। यह हजारों मछुआरों के लिए अजीविका का आधार है और तराई की जैवविविधता को बरकरार रखने में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। *

रोचक
अनिकेत सिंह

बहुत कुछ कहता है आपके चेहरे का तिल

चेहरे पर मौजूद तिल से सुंदरता तो निखरती ही है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार यह हमारे स्वभाव और भाग्य के बारे में भी बताता है। चेहरे के तिल से जुड़े संकेतों के बारे में रोचक बातें।



चेहरे का छोटा-सा तिल न केवल व्यक्ति के रूप और सौंदर्य में चार चांद लगाता है, बल्कि भारतीय परंपरा का एक अद्भुत अंग 'सामुद्रिक शास्त्र' के अनुसार वह व्यक्ति के भविष्य और स्वभाव के कई रहस्यों को भी खोलता है। सामुद्रिक शास्त्र में शरीर के तिल को केवल त्वचा का चिन्ह नहीं माना जाता, बल्कि उसे ग्रहों की स्थिति और भाग्य का संकेत माना जाता है। चेहरे के किस भाग पर तिल है, उससे व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, प्रेम जीवन, सफलता और उसके गुणों का अनुमान लगाया जा सकता है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार चेहरे का हर तिल प्रकृति की ओर से दिया गया एक विशेष संकेत होता है। तिल का आकार जितना छोटा, स्पष्ट और गहरा (गाढ़ा) होगा, उसका संकेत उतना ही अधिक स्पष्ट होता है। आपके चेहरे पर भी कहीं न कहीं ऐसा ही कोई भाग्यशाली तिल छिपा होगा। अपने चेहरे को दर्पण में देखें तो जान सकते हैं कि प्रकृति ने आपके ललाट या गाल पर क्या संकेत उकेरा है।

माथे पर तिल: सामुद्रिक शास्त्र में माथे को बुद्धि और भाग्य का स्थान माना जाता है। जिस व्यक्ति के माथे के दाहिनी ओर तिल हो, वह बहुत धनवान, बुद्धिमान और आत्मविश्वासी से भरा होता है। वे व्यापार या नौकरी में बड़ा स्थान हासिल करते हैं। माथे के बाईं ओर तिल होना यह दर्शाता है कि व्यक्ति बहुत खर्चीले स्वभाव का है। पैसा उनके पास आता तो है, लेकिन टिकता नहीं है। माथे के मध्य में तिल वाले लोग अत्यंत ज्ञानी, गंभीर और आध्यात्मिक विचारों वाले होते हैं।

भौंहों के पास तिल: दोनों भौंहों के ठीक बीच में तिल होना राजयोग के समान माना जाता है। ऐसे लोग अत्यंत बुद्धिमान, शांत और दीर्घायु होते हैं। उन्हें जीवन में तमाम भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं। दाहिनी भौंह पर तिल दांपत्य जीवन और सफल यात्रा का संकेत देता है, जबकि बाईं भौंह पर तिल जीवन में निरंतर संघर्ष को दर्शाता है।

गाल पर तिल: गाल पर तिल चेहरे की सुंदरता बढ़ाने के साथ-साथ व्यक्तित्व के बारे में भी बहुत कुछ बताता है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार, दाहिने गाल पर तिल वाले लोग अत्यंत भावुक, वफादार और दयालु होते हैं। उनका दांपत्य जीवन बहुत मधुर रहता है और पार्टनर की तरफ से पूरा सहयोग मिलता है।

बाएं गाल पर तिल वाले व्यक्ति थोड़ी गुस्से वाले और जिद्दी हो सकते हैं, लेकिन वे अपने लक्ष्य के प्रति अत्यंत स्पष्ट होते हैं।

होंठ और ठोड़ी पर तिल: होंठ के ऊपर या दाहिनी-बाईं ओर तिल होना व्यक्ति के आकर्षक व्यक्तित्व और कलाप्रेमी होने की निशानी है। ऐसे लोग भोजनप्रिय होते हैं और बातचीत करने में बहुत चतुर होते हैं। ठोड़ी पर तिल वाले लोग बहुत व्यावहारिक, संस्कारी और परंपरावादी होते हैं। वे समाज में मान-सम्मान पाते हैं। उन्हें यात्रा करने और नई जगहों की खोज करने का बहुत शौक होता है।

नाक पर तिल: नाक पर तिल होना व्यक्ति के तीक्ष्ण दिमाग और स्वाभिमान का संकेत है। जिन लोगों की नाक की ठीक नोक पर तिल होता है, वे बहुत तेजी से निर्णय लेने वाले और हाजिरजवाब होते हैं। हालांकि उन्हें कभी-कभी जल्दी गुस्सा आ जाता है, लेकिन उनका गुस्सा लंबे समय तक नहीं टिकता।

आंखों के पास तिल: आंख की पलकों के कोने पर तिल हो तो वह व्यक्ति अत्यंत शांत, गंभीर और संतोषी स्वभाव का होता है। दाहिनी आंख के कोने पर तिल व्यक्ति को अत्यंत भावुक बनाता है। *

सिने ट्रेंड
अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों में ब्लैक एंड व्हाइट के जमाने से ही बच्चों पर केंद्रित या उनसे जुड़े तमाम विषयों पर फिल्में बनती रही हैं। ऐसी फिल्में न केवल बड़ी-छोटी उम्र के दर्शकों का मनोरंजन करती हैं, साथ जरूरी सवाल पर विचार करने के लिए प्रेरित भी करती हैं। कल ही बाल दिवस बीता है। इस अवसर पर ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

सिल्वर स्क्रीन पर चमकता रहा है बच्चों की फिल्मों का जादू



फिल्म 'जागृति' का एक दृश्य

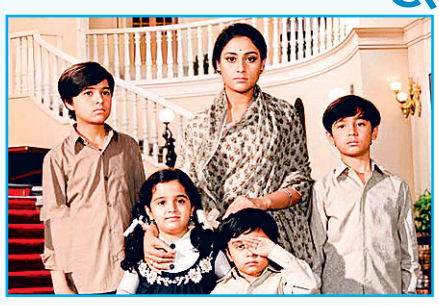

फिल्म 'परिचय' में बाल कलाकारों के साथ जया भादुड़ी

अपने शुरुआती दौर से हिंदी फिल्में कई तरह की शैलियों यानी जॉनर में बनती रही हैं। इनमें रोमांटिक, ट्रेजडी, कॉमेडी, हिस्टोरिकल, माइथो, फैमिली ड्रामा, सस्पेंस, थ्रिलर, क्राइम जैसी फिल्में शामिल हैं। लेकिन इस वर्गीकरण से अलग एक वर्ग और है, जिसकी फिल्में न केवल बनती रही हैं बल्कि बॉक्स आफिस पर अच्छा रिस्पॉन्स भी देती रही हैं। यह वर्ग है बच्चों से जुड़ी फिल्मों का। स्वतंत्र फिल्मकार बच्चों के विषय से जुड़ी फिल्में बनाते रहे हैं।

शुरुआती दौर की फिल्में: 1954 में राजकपूर द्वारा निर्मित और प्रकाश अरोड़ा द्वारा निर्देशित 'बूट पॉलिश' सफल फिल्म थी, जिसमें दो अनाथ बच्चों की कहानी दिखाई गई थी। इस फिल्म को 1955 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म फेयर अवॉर्ड भी मिला था। वर्ष 1957 में प्रदर्शित फिल्म 'अब दिल्ली दूर नहीं' की कहानी अख्तर मिर्जा और साहित्यकार राजिंदर सिंह बेदी ने लिखी थी, जिसका निर्देशन अमर सिंह ने किया था। इस फिल्म में 1951 का भारत दिखाया गया। एक बच्चा, जो कि उम्मीद भरी आंखों से एक नए स्वतंत्र भारत को देखता, वह कैसे पंडित जवाहर लाल नेहरू से मिलने के लिए दिल्ली पहुंच जाता है। उसके सामने क्या-क्या कठिनाइयां आती हैं। वह कैसे अपने पिता को जेल से रिहा कराता है? फिल्म की कहानी में उस छोटे बच्चे के संघर्ष को दिखाया गया है। 1960 में सत्येन बोस निर्देशित और अशोक कुमार, डेजी इरानी, हनी इरानी अभिनीत फिल्म 'मासूम' भी सफल थी। इसके एक साल बाद 1961 में बिमल रॉय द्वारा निर्मित फिल्म 'काबुलीवाला' एक बच्ची और अफगानिस्तान से सूखे मेवे बेचने आए पठान के निश्छल प्रेम की कहानी है। व्यावसायिक फिल्मों के पुरोधा एस. मुखर्जी ने जब बच्चों पर आधारित 'जागृति' का निर्माण किया तो उन्होंने भी निर्देशन की कमान सत्येन बोस को ही सौंपी।

बदलने लगा फिल्मों का स्वरूप: सत्तर के दशक में देशभर के स्कूली बच्चों को तपन सिन्हा की 'सफेद हाथी' और श्याम बेनेगल की 'चरणदास चोर' जैसी फिल्में दिखाई जाती थीं। इसके बाद दूसरा दौर आया तो बच्चों के लिए गुलजार ने 'परिचय' और 'किताब' जैसी फिल्में बनाई। बदलते दौर में सिनेमा का अंदाज बदला तो बच्चों से जुड़ी फिल्मों की कहानी और प्रस्तुतिकरण का अंदाज भी बदला। वर्ष 2003 में प्रदर्शित राकेश रोशन की फिल्म 'कोई मिल गया' में बच्चों के लिए एक नया विषय और दूसरे ग्रह से आया जादू को रोचक अंदाज में पेश किया गया।



बच्चों को खूब पसंद आई फिल्म 'कोई मिल गया'

जरूरी मुद्दे उठाती फिल्में: 2007 में प्रदर्शित आमिर खान निर्देशित 'तारे जमीं पर' भारत में शिक्षा प्रणाली पर एक महत्वपूर्ण चोट देती है। इस फिल्म की कहानी हमारे देश के लाखों बच्चों की है, जो कि डिस्लेक्सिया से पीड़ित हैं और इसी कारण से वे सीखने में असक्षम हैं। ऐसे बच्चों को किस तरह से सिखाना चाहिए, यह फिल्म के जरिए बताने की कोशिश की गई। इसी तरह 2010 में प्रदर्शित 'उड़ान' बॉलीवुड की एपिक फिल्मों में से एक है। यह फिल्म बच्चों और माता-पिता के बीच के कम्यूनिकेशन गैप को दर्शाती है। फिल्म में दिखाया गया कि कैसे कई बार परिजन बच्चों को अनुशासन सिखाने के चक्कर में उन पर हद से ज्यादा कंट्रोल करने लगते हैं। बच्चों



फिल्म 'तारे जमीं पर' ने उठाया जरूरी मुद्दा

में अनुशासन होना चाहिए, इतना नहीं कि उनका दम घुटने लगे। यह फिल्म ऐसे ही एक पिता और उसके बच्चों की कहानी को दर्शाती है।

2011 में अमोल गुप्ते निर्देशित 'स्टेनली का डब्बा' एक ऐसे बच्चे की कहानी है, जो किसी वजह से अपना टिफिन नहीं ला पाता। वहीं, हिंदी के टीचर वर्माजी (अमोल गुप्ते) भी अपना लंच बॉक्स नहीं लाते। उनकी नजर बच्चों के लंच बॉक्स पर रहती है। अमोल ने एक हमेशा भूखे रहने वाले टीचर का किरदार बखूबी निभाया था। यह एक मजेदार कॉमेडी फिल्म थी।

इसी साल प्रदर्शित 'आई एम. कलाम' एक गरीब बच्चे की जिंदगी पर आधारित थी, जो टीवी पर पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को पढ़ाई पर जोर देते हुए देखता है तो उसके मन में भी पढ़-लिखकर कुछ बनने का सपना जागता है। यह बच्चा हर तरह से मजदूरी कर केवल पढ़ाई करने की इच्छा रखता है। इस दौरान उसके जीवन में आने वाली कठिनाइयों को फिल्म में दिखाया गया है।

बच्चों से जुड़ी अन्य फिल्में: बच्चों पर आधारित पुराने दौर की फिल्मों में 'ब्रह्मचारी', 'आखिरी खत', 'छोटा चेतन', 'राजा और रंक' तथा 'चंदा और बिजली' ने बाल सुलभ विषय को पर्दे पर सफलता के साथ पेश किया। आज के दौर की 'चिल्लर पार्टी', 'बजरंगी भाईजान','द ब्लू अंब्रेला', 'मासूम', 'मिस्टर इंडिया', 'गट्टू', 'दो दूनी चार', 'इकबाल' और 'भूतनाथ' ने भी बच्चों का दिल बहलाया। *